بسم الله الرحمن الرحيم

لا اله الا الله محمد رسول الله

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[स०] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -23
Issue - 08

राह-ए-ईमान

अगस्त
2021 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

संपादक - मंडल
फज़ल नासिर

सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.

मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन.. 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी................ 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (गुनाह से मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है?)................4
5. सम्पादकीय (हिन्दु मुस्लिम एकता)..6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः 30 -07-2021..08
7. बहुविवाह का इस्लामिक दृष्टिकोण 12
8. सिलसिला अहमदिया भाग-21..21
9. मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन..23
10. फर्मूदात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि० 26
11. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है..28

☆ ☆ ☆

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्यः 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَ لَنۡ تَسۡتَطِيۡعُوۡۤا اَنۡ تَعۡدِلُوۡا بَيۡنَ النِّسَآءِ وَ لَوۡ حَرَصۡتُمۡ فَلَا تَمِيۡلُوۡا كُلَّ الۡمَيۡلِ
فَتَذَرُوۡهَا كَالۡمُعَلَّقَةِ ؕ وَ اِنۡ تُصۡلِحُوۡا وَ تَتَّقُوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوۡرًا رَّحِيۡمًا

अनुवाद:- और तुम ये तौफ़ीक़ नहीं पा सकोगे कि अपनी पत्नियों के बीच पूर्ण न्याय का मुआमला करो चाहे तुम कितना ही चाहो। इसलिए इतना अवश्य करो कि किसी एक की ओर पूरी तरह न झुक जाओ कि उस (दूसरी) को मानो अधर में लटकता हुआ छोड़ दो। और अगर तुम सुधार करो और संयम बरतो तो निस्संदेह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है। (सूरह निसा आयत- 130)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि से पूछा गया कि किस के पास बैठना (धार्मिक दृष्टि से) बेहतर है? आपने फ़रमाया: ऐसे व्यक्ति के पास बैठना उपयोगी है जिसे देखने से तुम्हें ख़ुदा तआला याद आए। जिस की बातों से तुम्हारे ज्ञान में वृद्धि हो और जिस के कर्म को देख कर तुम को आख़िरत (परलोक) का ध्यान आए। (और अपने अन्त को बेहतर बनाने के लिए तुम कोशिश करने लगो।)

(अत्तरग़ीब वत्तरहीब। भाग-1, पृष्ठ 76)

हज़रत अबूज़र वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे शरीर का हिस्सा नेकी और सदक़ा में शामिल हो सकता है। हर तस्बीह सदक़ात है, अल्हम्दोलिल्लाह कहना सदक़ा है, ला ईलाह इल्लल्लाह कहना सदक़ा है, तकबीर कहना सदक़ा है, धर्म का आदेश देना सदक़ा है, बुराई से रोकना भी सदक़ा है और चाश्त के समय दो र'कअतें नमाज़ पढ़ना इन सब नेकियों के बराबर है। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

☆ ☆ ☆

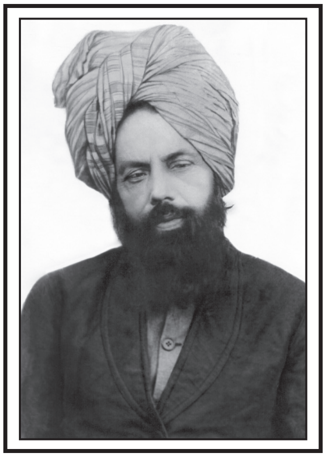

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"यदि हमारे सय्यिद-व्-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पत्नियां न करते तो हमें कैसे समझ आ सकता कि ख़ुदा के मार्ग में जान-तोड़ कोशिश के अवसर पर आप ऐसे बेतअल्लुक थे कि जैसे आप की कोई भी पत्नी नहीं थी, परन्तु आप ने बहुत सी पत्नियां निकाह में लाकर सैकड़ों परीक्षाओं के अवसरों पर यह सिद्ध कद दिया कि आपको शारीरिक आनन्दों से कुछ भी मतलब नहीं और आपका ऐसा अविवाहित जीवन है **कि कोई चीज़ आपको ख़ुदा से** रोक नहीं सकती। इतिहासकार लोग जानते हैं कि आप के घर में ग्यारह लड़के पैदा हुए थे और सबका निधन हो गया था और आप ने हर एक के निधन के समय यही कहा कि मुझे इस से कुछ संबंध नहीं मैं ख़ुदा का हूं और ख़ुदा की ओर जाऊँगा। हर बार सन्तान के मरने में जो कलेजे के टुकड़े होते हैं मुंह से यही निकलता था कि हे ख़ुदा! कि मैं तुझे हर एक चीज़ पर प्रमुख रखता हूं मुझे इस सन्तान से कुछ संबंध नहीं। क्या इस से सिद्ध नहीं होता कि आप सांसारिक इच्छाओं और कामुक इच्छाओं से कुछ संबंध नहीं रखते थे। और ख़ुदा के मार्ग में हर समय अपने प्राण हथेली पर रखते थे। एक बार एक युद्ध के अवसर पर आप की उंगली पर तलवार लगी और खून जारी हो गया। तब आप ने अपनी उंगली को सम्बोधित करके कहा कि हे उंगली! तू क्या चीज़ है केवल एक उंगली है जो ख़ुदा के मार्ग में ज़ख्मी हो गयी है।

एक बार हज़रत उमर[रज़ि०] आप[स॰] के घर में गए और देखा कि घर में कुछ सामान नहीं और आप एक चटाई पर लेटे हुए हैं और चटाई के निशान पीठ पर लगे हैं। तब उमर[रज़ि०] को यह हाल देख कर रोना आया। आप ने फ़रमाया कि हे उमर[रज़ि०]! तू क्यों रोता है? हज़रत उमर[रज़ि०] ने कहा कि आपके कष्टों को देखकर मुझे रोना आ गया। कैसर और किस्रा जो काफ़िर हैं आराम का जीवन व्यतीत कर रहे हैं और आप इन कष्टों में व्यतीत कर रहे हैं तब आप ने फ़रमाया कि मुझे इस संसार में क्या काम? मेरा उदाहरण उस सवार का है जो तीव्र गर्मी के समय एक ऊँटनी पर जा रहा है और दोपहर की तीव्र गर्मी ने उसे बहुत कष्ट दिया तो वह उसी सवारी की हालत में साँस लेने के लिए एक पेड़ की छाया के नीचे ठहर गया और फिर कुछ मिनट के बाद उसी गर्मी में अपना रास्ता लिया।

आप की पत्नियां भी हज़रत आइशा के अतिरिक्त सब बड़ी आयु को पहुँची हुई थीं। कुछ की आयु साठ वर्ष तक पहुँच चुकी थी। इस से ज्ञात होता है कि आप का कई निकाह करने से यही अहम और प्रमुख उद्देश्य था कि स्त्रियों में धर्म के उद्देश्यों को फैलाया जाए और अपनी सगंत में रख कर उनको धार्मिक ज्ञान सिखाया जाए ताकि वे अन्य स्त्रियों का अपने आचरण और शिक्षा से मार्ग दर्शन कर सकें।"

(चश्म-ए-मारिफ़त, रूहानी खज़ाइन, पृष्ठ- 299-300)

रूहानी ख़ज़ायन

गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है?

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

...जो व्यक्ति यूरोप के देशों आदि में से किसी देश में रहता है वह यदि चाहे तो गवाही दे सकता है कि यह बयान सही है बल्कि बुद्धिमान जिस ने कभी यूरोप की सैर की है और कुछ समय पैरिस इत्यादि में रह चुका है उसे इस गवाही में संकोच नहीं होगा कि अब यूरोप के कुछ भाग इस हालत तक पहुंच गए हैं कि क़रीब है कि अधिकांश लोगों की नज़र में व्यभिचार कुछ गुनाह ही नहीं है। उन के नज़दीक एक पत्नी से अधिक निकाह करना अवैध है परन्तु बुरी नज़र डालना अवैध नहीं। वास्तव में फ्रांस इत्यादि में लाखों स्त्रियां ऐसी पाई जाएंगी जिन को पति की आवश्यकता नहीं। तो या तो कहना पड़ेगा कि उन के लिए इंजील में से कोई नई आयत निकल आई है जिस से ये सब कारवाइयां वैध हो गई हैं या अवश्य यह कहना पड़ेगा कि मसीह के ख़ून (क़त्ल) के नुस्ख़े ने विपरीत प्रभाव किया और दावा ग़लत निकला। परन्तु सच यही है कि यह नुस्ख़ा सही न था तथा एक मनुष्य के मरने को दूसरे मनुष्य के मुक्ति पाने से कोई सम्बन्ध नहीं और ख़ुदा का जीवित होना समस्त बरकतों का आधार है न कि मरना। सूर्य के उदय होने से प्रकाश पैदा होता है न कि अस्त होने से। जब कि इस नुस्खे से गुनाहों से पवित्र होने का उद्देश्य प्राप्त न हो सका तो वह सिद्धान्त भी सही न रहा कि यह ख़ुदा का बेटा था जिस ने इस नीयत से अपने आप को मार दिया। हम ख़ुदा के लिए ऐसी मौत प्रस्तावित नहीं कर सकते कि जान भी गई और काम भी न हुआ। प्रथम तो यह बात ही ख़ुदा के अनादि नियम के विरुद्ध है कि ख़ुदा भी मौत, फना, प्रत्येक हानि और अपमान को स्वयं पर स्वीकार कर के एक स्त्री के पेट से पैदा हो सकता है। क्योंकि इस दावा को न तो किसी उदाहरण से सिद्ध किया गया है ताकि यह बात समझ में आ जाए कि चार बार पहले भी ख़ुदा ने इसी प्रकार से जन्म लिया था। और दिल संतुष्ट हो जाए और न इस दावे को ख़ुदा के चमत्कारों के साथ जो मानवीय चमत्कारों की सीमा से बाहर हों पुख़्ता सबूत तक पहुंचाया गया है। और फिर इस के बावजूद इस आस्था का मूल उददेश्य जिस के लिए आस्था बनाई गई थी बिल्कुल अज्ञात है। संसार में कामवासना सम्बन्धी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बड़े बड़े दो गुनाह हैं एक शराब पीना तथा एक व्यभिचार। अब बताओ कि क्या यह सच नहीं है कि इन दो गुनाहों (पापों) में यूरोप के अधिकतर पुरुष और स्त्रियों ने पूरा भाग लिया है बल्कि मैं इस बात में अतिशयोक्ति नहीं देखता कि शराब पीने में एशिया के समस्त देशों की अपेक्षा यूरोप बढ़ा हुआ है। यूरोप के अधिकतर शहरों में शराब बेचने की इतनी दुकानें मिलेंगी कि हमारे कस्बों की हर प्रकार की दुकानें मिला कर उन से बहुत कम होंगी और अनुभव गवाही दे रहा है कि

समस्त गुनाहों की जड़ शराब है। क्योंकि वह कुछ मिनट में ही नशे में मस्त करके ख़ून करने तक निडर कर देती है और दूसरे प्रकार का पाप और दुष्कर्म उसके आवश्यक सामान है। मैं सच-सच कहता हूं इस पर ज़ोर देता हूं कि शराब और संयम हरगिज़ जमा नहीं हो सकते। जो व्यक्ति इनके दुष्परिणामों से अवगत नहीं वह बुद्धिमान ही नहीं तथा इसमें एक और संकट है कि इसकी आदत को छोड़ना प्रत्येक का काम नहीं।

अब यदि यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि मसीह का ख़ून गुनाहों से पवित्र नहीं कर सकता जैसा कि वह वास्तविक तौर पर पवित्र नहीं कर सका तो फिर गुनाहों से पवित्र होने का कोई इलाज भी है या नहीं। क्योंकि गन्दा जीवन वास्तव में मरने से अधिक बुरा है। तो मैं इस प्रश्न के उत्तर में न केवल ज़ोरदार दावे से बल्कि अपने व्यक्तिगत अनुभव से और अपनी वास्तविकता उन आज़माइशों से देता हूं जो वास्तव में पापों से पवित्र होने के लिए उस समय से कि जो इन्सान पैदा हुआ आज तक जो अन्तिम दिन हैं पाप और अवज्ञा से बचने का केवल एक ही माध्यम सिद्ध हुआ है और वह यह है कि मनुष्य निश्चित तर्कों और चमकते हुए निशानों के द्वारा उस मारिफ़त तक पहुंच जाए जो वास्तव में ख़ुदा को दिखा देती है और स्पष्ट हो जाता है कि खुदा का प्रकोप एक खा जाने वाली आग है और फिर खुदा के सौन्दर्य की चमकार होकर सिद्ध हो जाता है कि प्रत्येक पूर्ण आनन्द खुदा में है। अर्थात प्रतापी और सौन्दर्य के तौर पर समस्त पर्दे उठाए जाते हैं। यही एक उपाय है जिससे कामवासना संबंधी वासनाएं रुकती हैं और जिस से मजबूर होकर मनुष्य के अन्दर एक परिवर्तन पैदा हो जाता है। इस उत्तर के समय कितने लोग बोल उठेंगे, क्या हम ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते? क्या हम ख़ुदा से नहीं डरते और उससे प्रेम नहीं रखते? और क्या समस्त संसार थोड़े लोगों के अतिरिक्त ख़ुदा को नहीं मानता। फिर वे भिन्न-भिन्न प्रकार के गुनाह भी करते हैं तथा नाना प्रकार के पाप और दुराचार में लिप्त दिखाई देते है। तो इसका उत्तर यह है कि ईमान और चीज़ है तथा इर्फ़ान और चीज़ है। हमारे वक्तव्य का यह उद्देश्य नहीं कि मोमिन गुनाह से बचता है। अर्थात् वह जिसने ख़ुदा के डर का मज़ा भी चखा और ख़ुदा के प्रेम का भी। शायद कोई कहे कि शैतान को पूर्ण मारिफ़त प्राप्त है फिर वह क्यों अवज्ञाकारी है। इसका यही उत्तर है कि उसे वह पूर्ण मारिफ़त हरगिज़ प्राप्त नहीं है जो भाग्यशाली लोगों को दी जाती है। यह मनुष्य की प्रकृति में है कि वह पूर्ण श्रेणी के ज्ञान से अवश्य प्रभावित होती है। और जब मौत का मार्ग अपना भयावह मुंह दिखाए तो उसके सामने नहीं आता। परन्तु ईमान की वास्तविकता केवल यह है कि सुधारण से स्वीकार कर ले, परन्तु इर्फ़ान की वास्तविकता यह है कि उस स्वीकार की हुई बात को देख भी ले। तो इर्फ़ान और इस्यान (अवज्ञा) दोनों का एक ही दिल में एकत्र होना असंभव है, जैसा कि दिन और रात का एक ही समय में एकत्र हो जाना असंभव है।

(पुस्तक- गुनाह से मुक्ति कैसे मिल सकती है? पृष्ठ 18-21)(शेष...)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय — हिन्दू-मुस्लिम एकता

हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए जमाअत अहमदिया के संस्थापक की चिंता

(एक अवसर पर आप ने फ़रमाया: "हिन्दू-मुस्लिम का पारस्परिक चोली-दामन का साथ हो रहा है")

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौहूद अलैहिस्सलाम ने अपने स्वर्गवास से कुछ दिन पहले पुस्तक "पैग़ाम-ए-सुलह" (मई, 1908 ई) लिखी। जिस में आप अलैहिस्सलाम ने अपनी अंतिम वसीयत के रूप में हिंदुस्तान की दो बड़ी क़ौमों हिन्दुओं और मुसलमानों को परस्पर मित्रता और सहिष्णुता पैदा करने की एक दर्दभरी अपील की है।

आप अपनी इस पुस्तक में लिखते हैं :

"हे मेरे देशवासी भाइयो! यह संक्षिप्त पत्रिका जिसका नाम है पैग़ाम-ए-सुलह (मैत्री-सन्देश) है, आदरपूर्वक आप सब सज्जनों की सेवा में प्रस्तुत की जाती है और हार्दिक सच्चाई के साथ दुआ की जाती है कि वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा आप लोगों के दिलों में स्वयं इल्हाम करे और हमारी हमदर्दी का राज़ आप के दिलों पर खोल दे ताकि आप इस मित्रवत् उपहार को किसी विशेष उद्देश्य और स्वार्थ पर आधारित न समझें। प्रियजनो! आख़िरत (परलोक) का मामला तो जन सामान्य पर प्राय: गुप्त रहता है और परलोक का रहस्य उन्हीं पर खुलता है जो मरने से पूर्व मरते हैं परन्तु दुनिया की नेकी और बदी (भलाई और बुराई) को प्रत्येक दूरदर्शी बुद्धि पहचान सकती है।

यह बात किसी पर छुपी नहीं कि एकता एक ऐसी बात है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार से दूर नहीं हो सकतीं और वे संकट जो किसी उपाय से हल नहीं हो सकते वे एकता से हल हो जाते हैं। अत: एक बुद्धिमान से (यह बात) दूर है कि एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे। हिन्दू तथा मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असंभव विचार है कि किसी समय जैसे हिन्दू एकत्र होकर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल देंगे या मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं को देश से निष्कासित कर देंगे अपितु अब तो हिन्दू-मुसलमान का परस्पर चोली-दामन का साथ हो रहा है। यदि एक पर कोई संकट आए तो दूसरा भी उसमें भागीदार हो जाएगा और यदि एक क़ौम दूसरी क़ौम को मात्र अपने व्यक्तिगत अभिमान और बड़प्पन से तिरस्कृत करना चाहेगी तो वह (स्वयं) भी तिरस्कार से सुरक्षित नहीं रहेगी और यदि उनमें से कोई अपने पड़ोसी के साथ सहानुभूति करने में असमर्थ रहेगा तो उसकी हानि वह स्वयं भी उठाएगा। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश की चिन्ता में है उसका उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जो एक टहनी पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग अल्लाह तआला की कृपा से शिक्षित भी हो गए अब वैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को त्याग कर सहानुभूति धारण करना आप की बुद्धिमत्ता के यथायोग्य है। संसार के संकट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है जो बिल्कुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है। इसलिए

इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी सहमति के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो इस जलती हुई अग्नि को शीतल कर दे और प्यास के समय मरने से बचाए। ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आपको सुलह (मैत्री) के लिए बुलाता है।" (पैग़ाम-ए-सुलह पृष्ठ-7-8)

अत: संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मौहूद अलैहिस्सलाम के इस आदेश का पालन करते हुए जमाअत अहमदिया ने सदैव ही सहिष्णुता, शांति, पारस्परिक भाईचारे और एकता का झंडा ऊंचा किया और सदैव उपद्रव के विरुद्ध आवाज़ उठाई है। जब भी दोनों क़ौमों में मतभेद की कोई अवस्था उत्पन्न हुई तो जमाअत अहमदिया के पवित्र ख़लीफ़ाओं ने अपने ख़ुत्बों में नसीहतों के द्वारा, लिखित संदेशों के माध्यम से और फिर दोनों क़ौमों के लीडरों से मुलाक़ात करके हर प्रकार से ये प्रयास किए कि पारस्परिक मतभेद दूर हों और देश का वातावरण सोहार्द पूर्ण बना रहे।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि कृपया अपने देश के वातावरण को अच्छा बनाने में सहयोग करें, प्रेम से रहें और दूसरों को रहने दें। धार्मिक तथा राजनैतिक कारणों से अपने व्यावहारिक जीवन को खराब न करें। क्योंकि कोई भी धर्म दूसरों से नफरत करना नहीं सिखाता बल्कि सभी धर्म अलग अलग समयों में ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते रहे हैं और रही बात राजनीति की तो उसका काम केवल और केवल देश की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाना और देश वासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है, और राज सदा किसी का नहीं रहता। जब से देश स्वतंत्र हुआ है कई पार्टियां आईं और गईं। लेकिन देश वही रहता है देशवाशी वहीं रहते हैं।

अत: प्रिय पाठको ! हर पढ़े लिखे नागरिक का समाज के प्रति एक उत्तरदायित्व होता है एक कर्तव्य होता है यदि समाज में या हमारे आस-पड़ोस में कोई व्यक्ति या कोई नौजवान गलत दिशा में जा रहा है या देश हित के विपरीत चल रहा है तो हमारा आपका कर्तव्य है कि उसको समझाने का प्रयत्न किया जाए या बड़े बुजुर्गों के द्वारा यह प्रयत्न करवाया जाए। क्यों.. ? क्योंकि यदि कोई अज्ञानी अपने घर में भी आग लगा रहा हो तो पड़ोसियों का कर्तव्य है कि उसको ऐसा करने से रोकें क्योंकि अगर वे उसे नहीं रोकेंगे तो केवल उसका ही घर नहीं जलेगा बल्कि वह आग पड़ोसियों के घर को भी जला सकती है और दुर्भाग्यवश एक-दो नहीं सैंकड़ों-हज़ारों घर भी अग्नि की भेंट चढ़ सकते हैं। इसलिए मेरे इस लेख को पढ़ रहे सज्जनों से मेरा निवेदन है कि हर वर्ष15 अगस्त को हम बड़ी धूम धाम से आज़ादी का जश्न मनाते हैं और इस आज़ादी को प्राप्त करने में जिन वीर जवानों ने अपने प्राण गवाए और शहीद हुए उनकी शहादत को याद करते हैं। इस आज़ादी की कद्र करें और आपस में प्यार-मुहब्बत से रहें ताकि यह आज़ादी देर तक हमारे साथ रहे। अल्लाह करे हमारे देश को किसी की बुरी नज़र न लगे कोई शत्रु हमारे देश को, देशवासियों को हानि न पहुँचा सके।

यह ऋषि मुनियों की धरती है इस धरती को पवित्र बनाने और बनाए रखने में एक-दूसरे का सहयोग करें। आपका पड़ोसी आपका सबसे अच्छा साथी होता है। प्राय: वह आपके दुख सुख में सबसे पहले आपकी सहायता के लिए आता है चाहे वह किसी भी धर्म का अनुयायी हो। अत: उससे प्रेम व्यवहार बना कर रखें। आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। जय हिन्द जय भारत।

फरहत अहमद आचार्य

सारांश ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक - 30.7.2021 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत उमर बिन अल् खत्ताब रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत उमर के ज़माने की लड़ाईयों का वर्णन हो रहा था। मदाइन की विजय के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई का वर्णन करते हुए हज़रत मिजऱ्ा बशीर अहमद साहब रज़ीयल्लाहु अन्हु "सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स.अ.व." में लिखते हैं कि ख़ंदक़ खोदते हुए एक स्थान पर ऐसा पत्थर निकला जो किसी तरह टूटने में न आता था। सहाबी तीन दिन के निरन्तर उपवास से निढाल थे, अन्त में तंग आकर वे रसूल-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी भूक के कारण पेट पर पत्थर बाँध रखा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुरन्त वहाँ तशरीफ़ लाए और एक कुदाल लेकर अल्लाह का नाम लिया तथा पत्थर पर चोट मारी। लोहे की टक्कर से पत्थर में से चिंगारी निकली जिस पर आप स. ने ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहा और फ़रमाया- मुझे शाम देश की चाबियाँ दी गईं तथा शाम के लाल महल मेरी आँखों के सामने हैं। फिर आप स. ने दूसरी बार चोट मारी और फ़रमाया- मुझे फ़ारस की चाबियाँ दी गईं तथा मदायन के सफ़ेद महल मुझे दिखाई दे रहे हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीसरी बार चोट मारी और फ़रमाया- अब मुझे यमन की चाबियाँ दी गईं हैं तथा सनआ के द्वार मुझे दिखाई दे रहे हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये दृश्य कश्फ़ के लोक से सम्बंध रखते थे, मानो उस तंगी की स्थिति में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने मुसलमानों को भविष्य में मिलने वाली विजय तथा समृद्धियों के दृश्य दिखा कर सहाबियों में आशा तथा उल्लास की रूह पैदा फ़रमा दी। मदायन की विजय का वादा हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर में हज़रत सअद

रज़ीयल्लाहु अन्हु के हाथों पूरा हुआ। क़ादसिय: की विजय के बाद मौजूदा इराक़ के पुराने नगर बाबुल को पराजय किया, बाबुल वर्तमान इराक़ का पुराना शहर था। बाबुल को विजय करने के बाद कूसा नामक ऐतिहासिक नगर के स्थान पर पहुंचे, ये बाबुल नगर का बाह्य क्षेत्र था। कूसा वह स्थान था जहाँ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नमरूद ने बन्दी बनाया था तथा बन्दी गृह की जगह उस समय तक सुरक्षित थी। हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु जब वहाँ पहुंचे तथा बन्दी गृह को देखा तो क़ुर्आन करीम की आयत पढ़ी- وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ अर्थात ये दिन ऐसे हैं कि हम इनको लोगों के बीच अदलते बदलते रहते हैं ताकि वे नसीहत पकड़ें। फिर कूसा से होते हुए इस्लामी सेना सीयर नामक समुद्र पर पहुंची। यहाँ ईरानियों ने किसरा के शिकारी शेर को सेना पर छोड़ दिया जो गरजता हुआ इस्लामी सेना पर हमला करने लगा। हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु के भाई हाशिम बिन अबी वक़ास ने शेर पर तलवार से वार किया और शेर वहीं ढेर हो गया।

किसरा राजगद्दी मदायन, बग़दाद से दक्षिण की दिशा में कुछ दूरी पर दजला नामक नदी के किनारे स्थिति थी। मुसलमान सेना के लिए नदी को पार करने का कोई उपाय दिखाई न देता था कि एक रात हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु को सपना दिखाया गया कि मुसलमानों के घोड़े पानी में दाख़िल हो रहे हैं। आप रज़ीयल्लाहु अन्हु ने यह फ़रमाते हुए कि मुसलमानो, आओ इस नदी को तैर कर पार करें, अपना घोड़ा नदी में डाल दिया। आप रज़ीयल्लाहु अन्हु के अनुसरण में अन्य सैनिकों ने भी अपने घोड़े दर्या में डाल दिए। विरोधी सेना ने यह आश्चर्य जनक दृश्य देखा तो भय के कारण चींख़ने लगे और भाग खड़े हुए कि देव आ गए, देव आ गए। मुसलमानों ने आगे बढ़ कर नगर तथा किसरा के महलों पर क़बज़ा कर लिया। इस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह भविष्य वाणी पूरी हो गई जो आप स. ने अहज़ाब के युद्ध के अवसर पर फ़रमाई थी। हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने आदेश दिया कि शाही ख़ज़ाना तथा मूल्यवान वस्तुएं जमा की जाएँ। मुसलमान सिपाहियों ने अत्यंत ईमानदारी के साथ पूरा सामान एकत्र कर दिया। माल-ए-ग़नीमत (युद्ध में विजय मिलने पर हाथ आई सम्पत्ति) नियमानुसार विभाजित होकर पाँचवां भाग दरबारे ख़िलाफ़त में भिजवा दिया गया।

जलूला का युद्ध 16 हिजरी में लड़ा गया। मदायन में पराजय के पश्चात ईरानियों ने बग़दाद तथा ख़ुरासान के बीच स्थित जलूला नामक नगर में एकत्र होकर युद्ध की तय्यारियाँ शुरु कर दीं। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के आदेशानुसार हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हाशिम बिन आतब को बारह हज़ार की सेना देकर जलूला की ओर भेजा। मुसलमानों ने महीनों नगर का घेराव किए रखा तथा इस बीच लगभग अस्सी अभियान हुए। जलूला की विजय पर हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने अरब के बाहर वाले लोगों का पीछा करने से मना करते हुए फ़रमाया कि मैं माल-ए-ग़नीमत में मुसलमानों की सलामती को प्राथमिकता देता हूँ।

जब माले ग़नीमत में से पाँचवाँ भाग हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेवा में प्रस्तुत किया गया

तो आप रज़ीयल्लाहु अन्हु ने माले ग़नीमत में मौजूद मूल्यवान हीरों को देखकर रो पड़े तथा फ़रमाया कि जिस क़ौम को यह प्रदान होता है तो उनमें ईष्र्या तथा द्वेष बढ़ जाता है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह बड़े चिंतन तथा तौबा वाली बात है, हम देख रहे हैं कि मुसलमानों में ईर्षा तथा द्वेष का रोग धन आने के बाद ही बढ़ता चला गया।

हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु भी मदायन में ही ठहरे हुए थे कि उन्हें ईरानी सेना के मैदानी क्षेत्र में आगे बढऩे की सूचना मिली। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की हिदायत के अनुसार ज़रार बिन ख़त्ताब के नेतृत्व में एक सेना मुक़ाबले के लिए निकली। मासबज़ान के मैदानी इलाक़े हंदफ़ नामक स्थाान पर लड़ाई हुई तथा ईरानियों की यहाँ भी हार हुई।

14 हिजरी में ख़ज्ऱ तअमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने सैन्य दृष्टि से कुछ लाभ देख कर इराक़ में छोटे स्तर पर एक दूसरा अभियान आरम्भ कर दिया तथा बसरा नगर की छावनी की स्थापना कर दी। उस क्षेत्र में सेना नियुक्त करने का उद्देश्य यही था कि ईरानी सेना को सहायता न पहुंच पाए। मुसलमानों ने ख़ूज़िस्तान के प्रसिद्ध नगर हुवास पर क़बज़ा किया तो वहाँ के सरदार बीरवाज़ ने सुलह कर ली। इस अभियान में मुसलमानों ने अनेक लोगों को बन्दी बनाकर ग़ुलाम बनाया था किन्तु हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के आदेश पर सब को रिहा कर दिया गया। इस अभियान में ईरानी दो रास्तों से मुसलमान सेना पर बार बार हमला करते थे, मुसलमानों ने इन दोनों रास्तों पर क़बज़ा कर लिया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अधिकांशत: हमें यही नज़र आता है कि जहाँ मुसलमानों को तंग किया जाता, हमले किए जाते, वहीं मुसलमानों ने हमले किए तथा उन्हीं स्थानों पर क़बज़ा किया।

जलूला नगर में मुसलमानों की विजय के बाद ईरानी सेना हरमज़ान के नेतृत्व में रामहरम्ज़ नामक स्थान पर एकत्र हुए। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की हिदायत पर हज़रत सअद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने नुअमान बिन मुकिरन को कूफ़ा तथा अबू मूसा अश्अरी को बसरा से सेना का सरदार बनाकर रवाना किया तथा निर्देश दिया कि जब दोनों सेनाएँ जमा हो जाएँ तो अबू सबरा बिन रुहुम उनके कमांडर हों। नोअमान बिन मुकिरन की सेना से हरमज़ान का मुक़ाबला हुआ तथा वह पराजित होकर तसतर की ओर भाग गया। लम्बी अवधि तक घेराव के बाद जब शहर पर विजय मिली तथा हरमज़ान गिरफ़तार किया गया तो उसने यह इच्छा व्यकत की कि उसका मामला हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु पर छोड़ दिया जाए। हज़रत अबू मूसा अश्अरी ने हरमज़ान को हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेवा में मदीना भिजवा दिया। जब क़ाफ़िला मदीना में दाख़िल हुआ तो हरमज़ान को उसका अपना रेशमी लिबास पहनाया गया जिस पर सोने से काम हुआ था तथा उसके सिर पर हीरों से जड़ा ताज रखा गया ताकि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु और मुसलमान उसकी वास्तविक काया को देख लें, फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के बारे में पूछा तो लोगों ने बताया कि मस्जिद में हैं। वे जब मस्जिद में पहुंचे तो हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु अपनी पगड़ी पर सिर रख कर सोए हुए थे। हरमज़ान ने पूछा उमर कहाँ हैं? लोगों ने बताया कि वे सो रहे हैं। उस

समय मस्जिद में आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था। हरमज़ान ने पूछा उनके पहरेदार और दरबान कहाँ हैं? लोगों ने कहा- उनको किसी द्वारपाल, दरबारी, लेखपाल तथा दीवान की आवश्कता नहीं है। हरमज़ान ने चकित होकर कहा कि यह व्यक्ति अवश्य ही कोई नबी लगता है। लोगों ने कहा कि नबी तो नहीं है किन्तु नबियों के तरीक़े पर अवश्य है। हरमज़ान हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सादगी से अत्यधिक प्रभावित हुआ तथा उसने एक रूचिकर वार्ता के बाद इस्लाम क़बूल कर लिया तथा मदीने में ही निवास कर लिया। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने उसका दो हज़ार वज़ीफ़ा नियुक्त फ़रमाया। अक्दुल फ़रीद में लिखा है कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ईरान पर सेना की चढ़ाई करने के लिए हरमज़ान से विचार विमर्श करते तथा उसके सुझाव के अनुसार अमल किया करते।

यह सन्देह भी किया जाता है कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु की शहादत में हरमज़ान का हाथ था लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु इस सन्देह को उचित नहीं समझते। अत: आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु का हत्यारा फ़िरोज़ हत्या से पहले एक दिन हरमज़ान से मिला था। फ़िरोज़ के हाथ में छुरा देख कर हरमज़ान ने उसका कारण पूछा तथा छुरे को हाथ में लेकर देखा। जिस समय वे दोनों बातें कर रहे थे उस समय किसी ने उन्हें देख लिया। जब हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु शहीद हो गए तो उसने बयान दे दिया कि मैंने स्वयं हरमज़ान को यह छुरा फ़िरोज़ को पकड़ाते हुए देखा था। इस पर हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के छोटे बेटे उबैदुल्लाह ने जाँच पड़ताल किए बिना स्वयं हरमज़ान की हत्या कर दी। जब हज़रत उसमान रज़ीयल्लाहु अन्हु ख़लीफ़: हुए तो आप रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हरमज़ान के बेटे को बुलाया तथा उबैदुल्लाह को उसके हवाले करते हुए फ़रमाया कि हे मेरे बेटे! यह तेरे बाप का हत्यारा है, अत: तू जा इसकी हत्या कर दे। यद्यपि बाद में हरमज़ान के बेटे ने लोगों की सिफ़ारिश पर उबैदुल्लाह का वध न किया, फिर भी इससे यह साबित होता है कि हत्यारे को गिरफ़तार करना तथा दंड देना शासन का काम है।

हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु का वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रमा प्रोफ़ैसर नसीम सईद साहिबा पतनी जनाब मुहम्मद सईद साहब (जो अलहाज हाफ़िज़ डाक्टर सय्यद शफ़ी साहब अनुसंधान कर्ता देहलवी की बेटी थीं), मुकर्रम दाऊद सुलेमान बट साहब जर्मनी (मरहूम जर्मनी में हिफ़ाज़ते ख़ास की ड्यूटी बड़ी उल्लास के साथ किया करते थे), मुकर्रमा ज़ाहिदा परवीन साहिबा पतनी ग़ुलाम मुस्तुफ़ा आवान साहब ढप्पी, ज़िला सियालकोट, मुकर्रम राणा अब्दुल वहीद साहब लंदन और मुकर्रम अलहाज मीर मुहम्मद अली साहब भूतपूर्व नैशनल अमीर जमाअत बंगला देश का सद्वर्णन तथा नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा की तथा समस्त मृतकों के लिए मग़फ़िरत और दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

☆ ☆ ☆

बहुविवाह का इस्लामिक दृष्टिकोण

(शोबा नूरुल इस्लाम के सौजन्य से)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत से विवाह राष्ट्रीय व राजनैतिक कारणों से हुए क्योंकि आप स. अ. व. चाहते थे कि अपने विशेष सहाबियों को विवाह के माध्यम से अपने साथ प्रेम के सम्बन्ध में जोड़ लें।

प्रिय पाठको! बुद्धि मनुष्य को ईश्वर की ओर से प्रदान किया गया वह उपहार है जिसके द्वारा वह सत्य तथा सीधी राह को प्राप्त कर लेता है। परन्तु कभी कभी साम्प्रदायिक व धार्मिक पक्षपात एवं नकरात्मक प्रवृत्ति मनुष्य की बुद्धि पर पर्दा डाल देती है ऐसे में सत्य कितना भी स्पष्ट क्यों न हो उसको समझना कठिन हो जाता है। पश्चिम के तथाकथित शोधकर्ताओं ने जब शोध की वेशभूषा में अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इस्लाम तथा मुसलमानों से सम्बन्धित हर चीज़ को अपने अनुचित आरोपों और सख़्त आलोचना का निशाना बनाना आरम्भ किया तो विशेष तौर पर पैग़म्बर ए इस्लाम स. अ. व. के पवित्र चरित्र को दागदार करने और आप के प्रति मुसलमानों की आस्था को कमज़ोर करने के लिए अपना सम्पूर्ण बल लगा दिया और आप स. अ. व. के पाक चरित्र पर ऐसे बेतुके आरोप लगाए जिनका बुद्धि, तर्क और सत्य से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। इस सम्बन्ध में प्राच्यविदों की वे मनगढ़त बातें भी हैं जिनमें उन्होंने रसूल -ए - करीम स. अ. व. के बहुविवाह को लेकर बहुत लांछन लगाए हैं। ये आरोप ऐसे बेतुके हैं कि इन घटनाओं के कारणों पर नज़र रखने वाला कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसे आरोप लगाने वालों की कज-फहमी, झूठ और तथ्यों से मुँह मोड़ने को बड़ी सरलता से मालूम कर सकता है।

प्राच्यविदों के आरोप

प्राच्यविदों ने बहुविवाह को आधार बनाकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अत्यंत कामुक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। इन लोगों ने आप स. अ. व. के विरुद्ध ऐसी भाषा का उपयोग किया है जो ज्ञान और शोध के स्तर से तो कोसों दूर है ही बल्कि सामान्य नैतिक मूल्य भी इसके ज़िक्र की अनुमति नहीं देते और इस पर घोर अत्याचार यह कि ऐसे लोगों को स्कॉलर और शोधकर्ता कहा जाता है। इन हज़ारों तथाकथित शोधकर्ताओं में से चन्द प्राच्यविदों के लेख उदहारण के तौर पर प्रस्तुत हैं:-

सर विलियम म्योर आप स. अ. व. के बारे में लिखते हैं-

"मुहम्मद स. अ. व. की आयु अब साठ वर्ष की हो रही थी परन्तु sex में कमज़ोरी आयु के साथ बढ़ती जाती थी और आपके बढ़ते हरम का आकर्षण अपनी हद से बढ़े हुए आपके जूनून को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त न था।"

इसी प्रकार प्राच्यविद केरन आर्मस्ट्रांग ने अपनी किताब "Muhammad" में अत्यंत छल पूर्वक यह जताने

का प्रयास किया है कि एक बार रसूल अल्लाह स. अ. व. की नज़र हज़रत ज़ैनब र. अ. सुपुत्री हजश पर पड़ी और उसकी सुन्दरता को देख कर आप स. अ. व. उसके प्रेम में फंस गए फिर जल्द ही हज़रत ज़ैनब र. अ. और हज़रत ज़ैद र. अ. की तलाक़ हो गई।" (Muhammad, page :167)

हज़रत उम्मे सलमा र. अ. से शादी के हवाले से जब आप स. अ. व. ने उन्हें विवाह के लिए सन्देश भेजा तो हज़रत उम्मे सलमा र. अ. ने बहाना बना दिया और इसके तीन कारण वर्णन किए:

1) मैं बड़ी उम्र की हूँ।

2) अनाथ बच्चों की माँ हूँ।

3) मेरे स्वभाव में कठोरता है।

इस पर केरन आर्मस्ट्रॉन्ग लिखती हैं:

आँहज़रत स. अ. व. यह बात सुनकर मुस्कुरा दिए। वह मुस्कुराहट ऐसी मीठी होती जो हर किसी को अपने वश में कर लेती थी।

तुलनात्मक खोज पर आधारित अध्ययन

इस्लाम धर्म से द्वेष रखने वालों ने कट्टरता और रसूलुल्लाह स. अ. व. के पवित्र जीवन तथा चरित्र को दागदार करने के लिए बहुविवाह का सहारा लेकर आप पर वासना में डूबे होने का घटिया आरोप लगाने का प्रयास किया है. आइए हम रसूलुल्लाह स. अ. व. के जीवन को समझदार और निष्ठावान लोगों की दृष्टि से देखते हैं।

विवाह के सम्बन्ध में नबी करीम स. अ. व. के जीवन के चार पड़ाव हैं:

1) जन्म से 25 वर्ष की अवधि जिसमें आप स. अ. व. ने कोई विवाह नहीं किया।

2) 25 से 55 वर्ष तक की अवधि जिसमें आप स. अ. व. के निकाह में कभी दो पत्नियाँ इकट्ठी नहीं हुई।

3) 55 से 60 वर्ष की संक्षिप्त अवधि जिसमें अनेक विवाह हुए।

4) 60 से 63 वर्ष की आयु में आप स. अ. व. के निधन तक का समय जिसमें आप स.अ.व. ने कोई विवाह नहीं किया।

आप स. अ. व. के जीवनकाल में बहुविवाह की अवधि अत्यन्त संक्षिप्त है। इसे आधार बनाकर आप स. अ. व. के उच्च आचरण पर कीचड़ उछालना घटनाओं की प्रष्ठभूमि तथा ऐतिहासिक वास्तविकताओं से अनभिज्ञता का प्रमाण है। यहाँ कुछ बातें ध्यान पूर्वक समझने की आवश्यकता है।

1) यदि एक से अधिक विवाह करना कामुकता के कारणों से होता है तो फिर यह आरोप केवल मुहम्मद स. अ. व. पर ही क्यों? इसकी लपेट में तो बहुत सी वे महान विभूतियाँ भी आती हैं जो केवल मुसलमानों के नज़दीक ही नहीं बल्कि यहूदियों, ईसाईयों और अन्य ग़ैर मुस्लिमों के मतानुसार भी आदरणीय व सम्मान के योग्य समझी जाती हैं।

बाईबल के अनुसार हज़रत इब्राहीम की तीन पत्नियाँ थीं। हज़रत हाजरा, सारा और कतूरा। हज़रत याक़ूब की चार पत्नियाँ थीं हज़रत लयाह, ज़ुल्फ़ा, राहील और बलहा। हज़रत दाऊद की 09 पत्नियों का नाम मिलता है। हज़रत सुलैमान की 700 पत्नियों और 300 हरमो का वर्णन मिलता है। सही बुखारी में हज़रत सुलैमान की पत्नियों की संख्या 60 से 100 तक बताई गई है। राजा दशरथ की तीन पत्नियाँ थीं रानी कौशल्या, रानी सुमित्रा, रानी कैकई। कृष्ण जी महाराज की अनेक गोपियों के अतिरिक्त 18 पत्नियां थीं।

यदि बहुविवाह के कारणवश इन अत्यंत आदरणीय तथा ऐतिहासिक विभूतियों पर आरोप नहीं लगाया जा सकता तो फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह पर क्यों? यदि कोई पैग़म्बर-ए-इस्लाम स. अ. व. की विवाहों पर प्रश्न खड़े करता है तो ये आरोप स्वयं इन सब विभूतियों पर भी लगेंगे।

2) फिर यह भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है कि अरब के उस समाज में व्यभिचार तथा शराब का सेवन प्रचलित था। इसके होते हुए आप स. अ. व. के घोर शत्रु भी आपके आचरण की पवित्रता के साक्षी थे। आप स. अ. व. के किसी शत्रु ने भी आप स. अ. व. के पवित्र आचरण पर उंगली नहीं उठाई। स्पष्ट है कि यदि उन्होंने आप स. अ. व. के व्यक्तित्व में भोग विलासिता के अत्यन्त सूक्ष्म लक्षणों का भी अवलोकन किया होता तो वे निश्चय ही इसे लेकर आप स. अ. व. के चरित्र पर उँगलियाँ उठाते।

मोमिनों की माँ हज़रत ख़दीजा र.अ. की स्मृति

(अल्लाह की पनाह) यदि आप स.अ.व. के विवाह वासना की पूर्ती के लिए होते तो जब क़ुरैश के सरदारों ने आप स.अ.व. को (नबुव्वत के दावे को त्यागने के बदले में) अरब की किसी भी अत्यन्त सुन्दर युवती से निकाह की पेशकश की तो आप स.अ.व. ने उसे क्यों ठुकरा दिया? आप स.अ.व. ने अत्यन्त सुन्दर युवती अथवा अरब सरदारों की बजाए एक ऐसी अधेड़ आयु की औरत से विवाह किया जो आप स.अ.व. से 15 वर्ष बड़ी थीं।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब र.अ. लिखते हैं:

"नि:संदेह यह एक ऐतिहासिक वास्तविकता है कि आँहज़रत स.अ.व. ने एक से अधिक विवाह किए और यह बात भी इतिहास का प्रमाणित भाग है कि हज़रत ख़दीजा र. अ. के अतिरिक्त आप स.अ.व. के सारे विवाह उस युग से सम्बन्ध रखते हैं जिसे बुढ़ापे की अवस्था कहा जा सकता है परन्तु बग़ैर किसी ऐतिहासिक प्रमाण के बल्कि स्पष्ट ऐतिहासिक प्रमाणों के विरुद्ध यह विचार कि आप स.अ.व.के ये विवाह (अल्लाह की पनाह) वासना की पूर्ती के लिए थे, एक इतिहासकार को शोभा नहीं देता और एक सज्जन व्यक्ति के वैभव से भी बहुत दूर है। म्योर साहिब इस वास्तविकता से अनभिज्ञ नहीं थे कि आँहज़रत स.अ.व. ने 25 वर्ष की आयु में एक 40 वर्षीय अधेड़ उम्र की विधवा से विवाह किया और फिर 50 वर्ष की आयु तक इस रिश्ते को इस सुन्दरता और निष्ठा के साथ निभाया जिसकी कोई मिसाल नहीं और इसके पश्चात् भी आप स.अ.व. ने 55 वर्ष की आयु तक केवल एक ही पत्नी रखी और यह पत्नी हज़रत सौदा र. अ. भी संयोग से एक विधवा और अधेड़ उम्र की महिला थीं और इस पूरे काल खंड में जो कामुक इच्छाओं के

भड़कने का विशेष समय है आप स.अ.व. के मन में कभी दूसरे विवाह का विचार नहीं आया।"

(सीरत खातमुन्नबीय्यीन पृष्ठ 553-554)

ऐसे महान व्यक्तित्व पर चरित्रहीनता का आरोप यदि इन्साफ़ का खून नहीं तो और क्या है?

बहुविवाह का सिद्धान्त तथा अन्य धर्म

जैसा कि पहले संक्षिप्त में वर्णन कर चुका हूँ कि बहुविवाह का सिद्धान्त केवल इस्लाम में ही मौजूद नहीं बल्कि अन्य धर्मों में भी इसी प्रकार बड़े विस्तार से इसका उल्लेख मिलता है।

"इस विषय पर बयान करते हुए हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब र.अ. लिखते हैं :-

"बहुविवाह के उल्लेख का यह अवसर अनुचित न होगा कि इसकी आज्ञा प्रदान करने वाला इस्लाम धर्म अकेला नहीं है बल्कि इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मो में भी बहुविवाह की आज्ञा है। उदाहरणतया मूसवी शरीयत (धर्म) में इसकी आज्ञा है तथा बनी इस्राईल के बहुत से नबी व्यवहारिक रूप से इसका पालन करते रहे हैं। हिन्दुओं के धर्म में बहुविवाह की आज्ञा है और कई हिन्दू सन्त एक से अधिक पत्नियाँ रखते रहे हैं। उदाहरणतया श्री कृष्ण जी महाराज ने व्यवहारिक तौर पर बहुविवाह का पालन किया और हिन्दू राजे महाराजे तो अब तक इसका पालन करते आए हैं। इसी प्रकार हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम का भी कोई कथन बहुविवाह के विरुद्ध नहीं मिलता और क्योंकि मूसवी शरीयत में इसकी आज्ञा थी तथा हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम के युग में भी इस प्रथा का रिवाज था और इसका पालन भी होता था। इसलिए हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की इस विषय पर ख़ामोशी से यही निष्कर्ष निकाला जाएगा कि वह इसे वैध समझते थे। अत: इस्लाम ने इसमें कोई नवीनकरण नहीं किया बल्कि इस्लाम ने यह किया कि बहुविवाह की हद बन्दी कर दी और इसे ऐसी शर्तों के साथ सीमित कर दिया कि लोगों तथा राष्ट्रों की असाधारण परिस्थितियों के लिए एक वरदान और लाभदायक व्यवस्था की स्थापना हो गई। (सीरत खातमुन्नबीय्यीन पृष्ठ- 445)

कुछ प्राच्यविदों का आप स.अ.व. के पक्ष में संस्वीकृति

यद्यपि विरोधियों की ओर से आँहज़रत स.अ.व. के विवाहों पर बहुत संगीन आरोप लगाए गए हैं और हर व्यक्ति ने अपने आचरण और विचारानुसार आप स.अ.व. के बहुविवाह के विषय को देखा है परन्तु सत्य ने कभी कभी विरोधियों के कलम और ज़ुबान पर भी नियंत्रण पाया है और उन्हें यदि पूर्णरूप से नहीं तो कम से कम आंशिक रूप से सत्य को स्वीकार करना पड़ा है। अत:एव मिस्टर मर्गोलेस भी जिनकी आँख समान्यत: हर सीधी बात को उल्टा देखने की अभ्यस्त है इस मामले में सत्य को स्वीकार करने पर मजबूर हुए हैं। वह अपनी किताब "मुहम्मद" में लिखते हैं :-

"मुहम्मद स.अ.व. के बहुत से विवाह जो खदीजा र.अ. के बाद हुए अधिकांश यूरोपियन लेखकों की दृष्टि में वासना पर आधारित बताए जाते हैं परन्तु गौर करने से मालूम होगा कि वे आकांशा पर आधारित नहीं थे। मुहम्मद स.अ.व. के बहुत से विवाह राष्ट्रीय व राजनैतिक हितों के लिए थे क्योंकि मुहम्मद स.अ.व. यह चाहते थे कि अपने विशेष-विशेष सहाबियों को विवाह के माध्यम से अपने साथ प्रेम के सम्बन्ध में अधिक

से अधिक जोड़ लें। अबू बकर र. अ. तथा उमर र. अ. की पुत्रियों के विवाह अवश्य ही इसी विचार से किए गए थे। इसी प्रकार प्रतिद्वंदी शत्रुओं तथा पराजित सरदारों की पुत्रियों के साथ भी मुहम्मद स.अ.व. के विवाह राजनैतिक हितों के कारणों से हुए .... शेष विवाह इस नीयत से थे कि इसके द्वारा आप स.अ.व. को पुत्र प्राप्ति हो जाए जिसकी आप स.अ.व. को बहुत आशा थी।

यह उस व्यक्ति की राय है जो आँहज़रत स.अ.व. की जीवनी लिखने वालों में शत्रुता एवं पक्षपात के लिहाज़ से सम्भवत: प्रथम श्रेणी में हैं और यद्यपि मर्गोलिस साहिब की राय दोषरहित तो बिलकुल नहीं है परन्तु इससे यह प्रमाण तो अवश्य मिलता है कि सत्य किस प्रकार एक शत्रु के हृदय को भी परास्त कर सकता है।"
(सीरत खातमुन नबीय्यीन पृष्ठ 445-446)

इसी प्रकार तपस्विन प्रोफेसर केरन आर्मस्ट्रांग जो कहीं कहीं विरोधी भी दिखाई देती हैं वह भी इस वास्तविकता का गुणगान करने पर बाध्य हुई हैं और बहुविवाह की आड़ में पश्चिम वालों के व्यभिचार के आरोप का खण्डन करते हुए अपनी किताब "मुहम्मद" में लिखा :

"परन्तु यदि बहुविवाह को उसकी पृष्ठभूमि में देखा जाए तो इसे लड़कों की सेक्स लाइफ में सुधार करने के लिए नहीं रचा गया बल्कि यह समाज के विधि निर्माण का एक अंग था। अनाथ बच्चे बच्चियों की समस्या से आँहज़रत स.अ.व. आरम्भ से ही जूझ रहे थे लेकिन उहद के युद्ध में बहुत से मुसलमानों की शहादत ने इसमें और वृद्धि कर दी। शहीद होने वालों ने केवल विधवाएँ ही अपने पीछे नहीं छोड़ी बल्कि बेटियाँ, बहनें और अन्य रिश्तेदार जिन्हें नए सहारों की आवश्यकता थी उन अनाथ बच्चों के नए अभिभावक उनकी सम्पत्ति का प्रबंध करने में न्यायसंगत नहीं हो सकते थे। कई ऐसी औरतों का विवाह इसलिए नहीं होने देते ताकि अभिभावक उनकी सम्पत्तियाँ अपने अधिकार में रख सकें। एक पुरुष के लिए अपने अधीन औरतों से विवाह करना कोई असाधारण बात न थी जिसके द्वारा वे उनकी सम्पत्तियां भी अपने अधिकार में ले लें।"

(उस्वा-ए-इन्सान-ए-कामिल, पृष्ठ- 458-459 से उद्धरित)

बहुविवाह पर कुछ महत्वपूर्ण नोट

इस युग के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुविवाह के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं-

"ख़ुदा के विधान का उपयोग उसकी इच्छा से विपरीत कदापि नहीं करना चाहिए और न उससे ऐसा लाभ उठाना चाहिए जिससे वह केवल इच्छापूर्ति के लिए एक ढाल बन जाए। स्मरण रहे कि ऐसा करना पाप है। ख़ुदा तआला बार-बार फ़रमाता है कि वासना का तुम पर नियंत्रण न हो बल्कि तुम्हारी मंशा हर एक बात में तक़्वा (सदाचार) हो। यदि शरीयत को ढाल बनाकर वासनापूर्ति के लिए पत्नियाँ रखी जाएंगी तो इसके अतिरिक्त और क्या निष्कर्ष निकलेगा कि अन्य समाज के लोग आरोप लगाएंगे कि मुसलमानों को पत्नियाँ करने के अतिरिक्त और कोई कार्य ही नहीं। व्यभिचार का नाम ही पाप नहीं बल्कि वासना का खुले तौर पर हृदय में पड़ जाना भी पाप है। सांसारिक भाव का अंश मानव जीवन में बहुत ही कम होना चाहिए ताकि -

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (सुर:अल-तौबा:82)

अर्थात 'हँसो थोड़ा और रोओ अधिक' की तस्वीर बनो लेकिन जिस व्यक्ति की विलासिता अधिक है और वह दिन रात पत्नियों में ही ग्रस्त रहता है उसे करुणा व रोना कब नसीब होगा? अधिकांश लोगों का यह हाल है कि वे एक विचार के समर्थन तथा अनुसरण में समस्त प्रबंध करते हैं और इस प्रकार ख़ुदा तआला की वास्तविक इच्छा से दूर जा पड़ते हैं। ख़ुदा तआला ने यद्यपि कुछ वस्तुएँ वैध तो घोषित कर दीं परन्तु उससे यह अभिप्राय नहीं है कि सम्पूर्ण जीवन ही उसमें व्यतीत किया जाए। ख़ुदा तआला तो अपने भक्तों की विशेषता में फ़रमाता है:

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا (अल-फ़ुरक़ान: 65)

अर्थात वे अपने रब के लिए पूरी पूरी रात सजदा और क़ियाम की अवस्था में व्यतीत करते हैं। अब देखो रात दिन पत्नियों में ग्रस्त रहने वाला ख़ुदा तआला की मंशा के अनुसार रात कैसे इबादत में काट सकता है? आँहज़रत स.अ.व. की 9 पत्नियाँ थीं इसके बावजूद आप स.अ.व.सारी सारी रात ख़ुदा की इबादत (उपासना) में व्यतीत करते थे।

खूब याद रखो कि ख़ुदा तआला की वास्तविक मंशा यह है कि इच्छाएं तुमको परास्त न कर सकें और वास्तव में यदि सदाचार की पराकाष्ठा हेतु आवश्यकता पड़े तो और विवाह कर लो। अतैव जानना चाहिए कि जो व्यक्ति इच्छाओं का अनुसरण करते हुए अधिक पत्नियाँ रखता है वह इस्लाम के सार से दूर रहता है। हर एक दिन जो चढ़ता है और रात जो आती है यदि वह सादगी से जीवन व्यतीत नहीं करता और रोता कम अथवा बिल्कुल ही नहीं रोता और हँसता अधिक है तो ज्ञात रहे कि उसका विनाश निश्चय है।"

(मलफ़ूज़ात खण्ड 4 ,पृष्ठ 50-51, संस्करण 1988)

हज़रत मुस्लेह मौऊद र.अ. बहुविवाह के सम्बन्ध में फ़रमाते हैं :

"रसूल-ए-करीम स.अ.व. पर यह आरोप लगाया जाता है कि उनकी अनेक पत्नियाँ थीं और यह कि आप स.अ.व. का यह कार्य इच्छापूर्ति के लिए था (अल्लाह की पनाह) परन्तु जब हम उस सम्बन्ध को देखते हैं जो आप स.अ.व. की पत्नियों का आप के साथ था तो हमें मानना पड़ता है कि आप स.अ.व. का सम्बन्ध ऐसा पवित्र, निस्वार्थ तथा ऐसा आध्यात्मिक था कि किसी एक पत्नी वाले पुरुष का सम्बन्ध भी अपनी पत्नी से ऐसा नहीं होता। यदि रसूलुल्लाह स.अ.व. का सम्बन्ध अपनी पत्नियों से अय्याशी का होता तो उसका अवश्य ही निष्कर्ष यह निकलता कि आप स.अ.व.की पत्नियों के दिल किसी आध्यात्मिक भाव से प्रभावित न होते। परन्तु आप स.अ.व. की पत्नियों के दिल में आप के लिए जो प्रेम था और आप का उत्तम प्रभाव जो उन पर पड़ा वह अनेक ऐसी घटनाओं से प्रकट होता है जो आप स.अ.व.की मृत्यु के पश्चात् आप की पत्नियों के सम्बन्ध में इतिहास से सिद्ध है। उदहरण के लिए यह घटना कितनी छोटी सी थी कि मैमूना र.अ. रसूलुल्लाह स.अ.व. से पहली बार हरम (मक्का) से बाहर एक शिविर में मिलीं। यदि रसूलुल्लाह स.अ.व. का सम्बन्ध उनसे केवल शारीरिक सम्बन्ध होता और यदि आप स.अ.व. किसी एक पत्नी पर दूसरी को प्राथमिकता देते तो मैमूना र.अ. इस घटना को अपने जीवन की कोई अच्छी घटना न समझतीं बल्कि प्रयास करतीं कि यह घटना उनकी स्मृति से मिट जाए। परन्तु मैमूना र.अ. रसूलुल्लाह

स.अ.व. की मृत्यु के पश्चात् 50 वर्ष तक जीवित रहीं और 80 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हुई परन्तु इस प्रिय सम्बन्ध को वह जीवनभर भुला न सकीं। 70 वर्ष की आयु में जब जवानी के भाव सब ठण्डे हो चुके होते हैं रसूलुल्लाह स.अ.व.की मृत्यु के पश्चात् 50 वर्ष का जो समय है जो एक स्थिर आयु कहलाने योग्य है मैमूना र.अ. का निधन हुआ और उस समय उन्होंने अपने आस पास के लोगों से आग्रह किया कि जब मेरी मृत्यु हो जाए तो मक्का के बाहर एक मंजिल की दूरी पर उस स्थान पर जहाँ रसूल-ए-करीम स.अ.व. का शिविर था और जहाँ मैं पहली बार आप स.अ.व. की सेवा में प्रस्तुत हुई मेरी क़ब्र बनाई जाए और मुझे वहाँ दफन किया जाए। संसार में सत्य कथाएँ भी होती हैं और किस्से कहानियां भी परन्तु क्या सत्य कथाओं में से भी और किस्से कहानियों में से भी क्या कोई घटना इस अमर प्रेम से अधिक प्रभावशाली प्रस्तुत की जा सकती है।" (दीबाचा तफसीरुल क़ुरआन, पृष्ठ- 205)

फ़रमाया: "कुछ लोग एक से अधिक विवाह को अत्याचार घोषित करते हैं परन्तु यह निर्दयता नहीं क्योंकि ऐसी आवश्यकताएं प्रकट हो सकती हैं जब विवाह न करना निर्दय हो जाता है। एक औरत जो पागल हो जाए या कोढ़ी हो जाए या उससे बच्चे न हों तो उस समय उसका पति क्या करे ? अगर वह दूसरा विवाह न करेगा और किसी बुराई में पड़ जाएगा तो यह उसका स्वयं पर और समाज पर अत्याचार होगा? और यदि वह कोढ़ी है तो खुद की जान पर अत्याचार होगा? यदि बच्चे नहीं तो समाज पर अत्याचार होगा? और यदि वह पहली पत्नी को छोड़ दे तो यह बहुत ही बेशर्मी और बेवफाई होगी कि जब तक वह स्वस्थ रही यह उसके साथ रहा तथा जब उस पत्नी को उसकी सहायता की सर्वाधिक आवश्यकता थी उसने उसे छोड़ दिया। अत: बहुत से अवसर ऐसे आते हैं कि दूसरा विवाह वैध ही नहीं अपितु आवश्यक से भी बढ़कर एक सामाजिक दायित्व बन जाता है।

पति-पत्नि के सम्बन्ध के फलस्वरूप सन्तानोत्पत्ति होती है जो सभ्यता की एक प्रकार से दूसरी ईंट है। बच्चों के सम्बन्ध में इस्लाम का यह आदेश है कि उनका भली-भाँति पालन पोषण किया जाए फिर फ़रमाया कि बच्चों को ज्ञान और अच्छे आचरण सिखाए जाएँ और बचपन से ही उन्हें शिक्षित किया जाए ताकि बड़े होकर सार्थक बनें।"

(अहमदिय्यत यानि हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल-उलूम खण्ड 8,पृष्ठ 276)

फ़रमाया:- "अब रहा बहुविवाह का विषय इस ओर अभी तक पश्चिम ने सही से ध्यान नहीं दिया परन्तु अंत में ऐसा करना पड़ेगा क्योंकि प्रकृति के कानून से देर तक संघर्ष नहीं किया जा सकता। लोग कहते हैं कि यह एक अय्याशी का साधन है परन्तु यदि इस्लाम के आदेशों पर चिन्तन किया जाए तो हर एक व्यक्ति समझ सकता है कि यह अय्याशी नहीं बल्कि त्याग है और त्याग भी बहुत महान। अय्याशी किसको कहते हैं? इसी को कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को पूरा करे परन्तु इस्लाम के आदेशानुसार एक से अधिक पत्नियाँ करने से दिल की इच्छा किस प्रकार पूरी हो सकती है का पालन करने से मन की इच्छाएँ कैसे पूर्ण हो सकती हैं ? इस्लाम का आदेश है कि एक पत्नी चाहे कितनी भी प्रिय क्यों न हो उसके साथ बर्ताव में अन्तर न करो। तुम्हारा मन चाहे उसे अच्छे वस्त्र पहनाने को चाहता हो परन्तु तुम उसे वह वस्त्र

नहीं पहना सकते जब तक कि दूसरी पत्नियों को भी वैसा ही वस्त्र न पहनाओ। तुम्हारा मन चाहे उसे अच्छा भोजन कराना चाहता हो अथवा उसके लिए नौकर का प्रबन्ध करना चाहता हो परन्तु इस्लाम कहता है कि तुम ऐसा कदापि नहीं कर सकते तब तक कि ऐसा ही व्यवहार दूसरी पत्नि से न करो। तुम्हारा मन एक पत्नि के घर चाहे कितना भी रहने को चाहता हो परन्तु इस्लाम कहता है कि तुम कदापि ऐसा नहीं कर सकते जब तक उतना ही समय दूसरी पत्नि के साथ न बिताओ अर्थात बराबरी की बारी निर्धारित करो। फिर तुम्हारा मन एक पत्नि से मिलने के लिए चाहे कितना भी चाहता हो, इस्लाम कहता है कि नि:संदेह तुम अपने दिल की इच्छा पूरी करो मगर उसी प्रकार तुम को अपनी दूसरी पत्नि के पास जाकर बैठना होगा। अत: दिल के सम्बन्ध के अतिरिक्त जो किसी को मालूम नहीं हो सकता, बर्ताव, व्यवहार, संवेदना आदि किसी मामले में भेदभाव करने की आज्ञा नहीं। क्या यह जीवन अय्याशी में लिप्त जीवन कहला सकता है? या यह समाज और राष्ट्र के लिए अथवा उन लाभों के लिए जिनके लिए दूसरा विवाह किया जाता है एक त्याग है और त्याग भी कितना बड़ा? (अहमदिय्यत यानि हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल उलूम खण्ड 8, पृष्ठ- 275)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद र.अ. लिखते हैं:-

"इस्लाम ने बहुविवाह के कुछ विशेष कारण भी बताए हैं, वे तीन हैं: प्रथम अनाथ की सुरक्षा व सरक्षण, द्वितिय विधवाओं का प्रबन्ध, तृतीय सन्तानोत्पत्ति। ..... हर समझदार व्यक्ति समझ सकता है कि यह एक अत्यन्त उत्तम प्रबन्ध है जो अल्लाह तआला ने आँहज़रत स.अ. व. के द्वारा संसार में स्थापित किया है और इसमें मानवजाति के बड़े से बड़े भाग के बड़े-बड़े कल्याण निहित हैं... बात का सार यह है कि इस्लाम में बहुविवाह का प्रबन्ध एक विशेष व्यवस्था है जो मनुष्य की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रख कर जारी की गई है। और यह एक त्याग है जो पुरुष व स्त्री दोनों को अपने आचरण और धर्म और खानदान और समाज और राष्ट्र के लिए विशेष परिस्थितियों में करना पड़ता है। ..... यह भी याद रखना चाहिए कि बहुविवाह की जायज़ आवश्यकता के पैदा होने पर भी इस्लाम ने इसे अनिवार्य घोषित नहीं किया। इस अवसर पर यह उल्लेख भी उपयुक्त मालूम होता है कि इस्लाम से पूर्व अरबों में बल्कि संसार के किसी भी समाज में बहुविवाह की कोई सीमा निर्धारित नहीं थी और प्रत्येक व्यक्ति जितनी भी चाहता पत्नियाँ रख सकता था परन्तु इस्लाम ने दूसरी अन्य शर्तें निर्धारित करने के अतिरिक्त संख्या की दृष्टि से भी इसे अधिक से अधिक चार तक सीमित कर दिया।

अत: इतिहास से पता लगता है कि जिन नए नए धर्मांतरित मुसलमानों की चार से अधिक पत्नियाँ थीं उन्हें यह आदेश था कि चार से अधिक जो भी हों उन को तलाक़ दे दें। उदाहरणस्वरूप गैलान बिन सलमा सक़फ़ी जब मुसलमान हुए तो उनकी 10 पत्नियाँ थीं जिनमें से 06 को आदेशनुसार तलाक़ दिलवा दी गई।

(सीरत खातमुन्नबीय्यीन, पृष्ठ 435-441)

☆ ☆ ☆

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H/O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

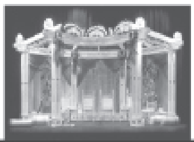

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's

CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय) जिल्द-1

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-28) अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

खुत्बा इल्हामिया - 1900 ई० के आरंभ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर एक अत्यंत महान और ज्ञानवर्धक चमत्कार प्रदर्शित हुआ और वह यह कि जब इस वर्ष की ईदुल अज़्हिया का अवसर आया तो आपको अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा आदेश दिया कि तुम ईद के अवसर पर अरबी भाषा में भाषण दो और हम तुम्हारी सहायता करेंगे। अत: इसके बावजूद की आपने कभी अरबी भाषा में भाषण नहीं दिया था आप इस ख़ुदाई आदेश के अंतर्गत भाषण के लिए खड़े हो गए और क़ादियान की मस्जिद अक्सा में कुर्बानी के विषय पर एक अत्यंत सूक्ष्म और लंबा भाषण दिया उस समय आपकी आंखें लगभग बंद थी और मुख पर लाली के चिन्ह थे और आप अत्यंत तीव्रता के साथ बोलते जाते थे और भाषण देखने वालों को आपने यह आदेश दिया हुआ था कि यदि कोई शब्द समझ न आए तो तुरंत पूछ लें क्योंकि संभव है कि वह बाद में मुझे भी याद न रहे। यह भाषण बाद में ख़ुत्बा इल्हामिया के नाम से प्रकाशित हो चुका है जिसके आरंभिक 38 पृष्ठ मूल मुद्दे के हैं और शेष भाग आपने बाद में ज़्यादा किया है और इस पुस्तक के अध्ययन से प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि केवल भाषा की सुबोधता और सरलता अपितु विषयों की सूक्ष्मता और दुर्लभता के रूप से यह भाषण अपने अंदर एक विलक्षता रखता है। आप बाद में कहते थे कि इस भाषण के मध्य कई बार मेरे समक्ष परोक्ष की ओर से लिखे हुए शब्द प्रस्तुत किए जाते थे और मैं स्वयं को ऐसा समझता था कि मानों ख़ुदा के शक्तिशाली हाथ में मृत के समान पड़ा हूं और वह जिस प्रकार चाहता है मेरी ज़बान को चला रहा है।

जिहाद की अवैधता का फ़तवा - यह बताया जा चुका है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने दावे के आरंभ से ही अपने मिशन को एक शांति और मैत्रिता का मिशन समझते थे और किसी खूनी मसीह अथवा खूनी महदी के समर्थक न थे और न ही धर्म के मामले में अत्याचार और हिंसा को वैध समझते थे। लेकिन अब 1900 ई० में आकर आपने एक नियमित फ़तवे के माध्यम से इस बात की घोषणा की कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के लिए तलवार का जिहाद किया तो आप इसके लिए अपने शत्रुओं के प्रकारों के कारण विवश थे परंतु वर्तमान युग में यह अवस्था नहीं है अपितु देश में एक शांतिमय और दृढ़ सरकार स्थापित है जिसने प्रत्येक प्रकार की धार्मिक आज़ादी दे रखी है अत: आज कल धर्म के लिए तलवार उठाने का विचार एक बिल्कुल झूठ और इस्लाम के विरुद्ध विचार है और आपने लिखा कि यह जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मसीह मौऊद जिज़िया और युद्ध को समाप्त कर देगा तो इस का भी यही अर्थ है कि उसका समय शांति का समय होगा इसलिए तलवार की आवश्यकता नहीं रहेगी और तर्कों और दलीलों के ज़ोर से इस्लाम का प्रचार होगा। अत: आप फ़रमाते हैं हदीसों में पहले से लिखा गया था कि जब मसीह आएगा तो धर्म के लिए लड़ना अवैध किया जाएगा अत: आज से धर्म के लिए लड़ना अवैध किया गया। अब इसके बाद जो धर्म के लिए तलवार उठाता है और गाज़ी नाम रखा

कर काफिरों को कत्ल करता है वह ख़ुदा और उसके रसूल का अवज्ञाकारी है....... मेरे प्रकटन के बाद तलवार का कोई जिहाद नहीं, हमारी ओर से शांति और मित्रता का सफेद झंडा ऊंचा किया गया है ख़ुदा तआला की ओर निमंत्रण करने का एक मार्ग नहीं अत: जिस मार्ग पर मूर्ख लोग आपत्ति कर चुके हैं और ख़ुदा तआला की युक्ति और हित नहीं चाहता की उसी मार्ग को फिर अपनाया जाए.......अत: मसीह मौऊद अपनी सेना को इस अवैध स्थान से पीछे हट जाने का आदेश देता है। जो बुराई का बुराई के साथ मुकाबला करता है वह हम में से नहीं है। स्वयं को दुष्ट के हमले से बचाओ। परंतु स्वयं दुष्ट बन कर मुक़ाबला न करो।

जमाअत अहमदिया का नाम अहमदी रखा जाना - अब 1901 ई० का वर्ष आरंभ होने वाला था जबकि देश में सरकार की ओर से जनगणना होने वाली थी। जमाअत के लिए यह पहली जनगणना थी और आवश्यक था की जमाअत का कोई नाम निर्धारित कर दिया जाए जो उसे दूसरे इस्लामी संप्रदायों से अलग करे। इस पर आप ने 1900 ई० के अंत में एक विज्ञापन के द्वारा घोषणा की कि आगे से आप की स्थापित की हुई जमाअत का नाम जमाअते अहमदिया होगा और यह कि इसी नाम के अंतर्गत जनगणना में आप के अनुयायियों का वर्णन होना चाहिए इसके बाद से आपकी जमाअत अहमदिया और आपके मानने वाले अहमदी कहलाने लगे परंतु यह एक बहुत अफ़सोस और कष्ट की बात है कि विरोधियों ने इस छोटे से मामले में भी अपनी दुष्टता का और सभ्यता का सबूत दिया है और बजाय इस नाम को प्रयोग करने के जो जमाअत ने अपने लिए पसंद किया है वह उन्हें मिर्ज़ाई या क़ादियानी के नाम से याद करते हैं इससे हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ता परंतु निस्संदेह उनके अपने शिष्टाचार पर अच्छा प्रकाश नहीं पड़ता। अहमदी नाम का कारण हज़रत मसीह मौऊद ने यह बताया है कि पवित्र क़ुरआन और हदीस से प्रकट होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दो अवतरण निश्चित थे। एक वैभवपूर्ण अवतरण था जो कि स्वयं आप के अस्तित्व के माध्यम से मुहम्मद नाम के अंतर्गत हुआ और दूसरा सौंदर्यपूर्ण अवतरण निश्चित था जो एक ज़िल और बरूज़ (अर्थात उसकी छाया समान और उसकी गुलामी में) के द्वारा अहमद नाम के अंतर्गत होनी थी और आप ने लिखा कि क्योंकि यह ज़िल और बरूज़ मैं हूं इसलिए मैंने ख़ुदा की इच्छा के अंतर्गत अपनी जमाअत का नाम अहमदिया रखा है।

उस समय तक जमाअत अहमदिया की प्रगति और उसके कारण - यह बताया जा चुका है कि पहले दिन जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लुधियाना में बैत का सिलसिला आरंभ किया तो आपके हाथ पर 40 आदमियों ने बैत की थी यह मार्च 1889 ईस्वी की घटना है। यह 40 सहाबा लगभग सारे के सारे वे लोग थे जो एक अवधी से आपके प्रभाव के अंतर्गत आकर आप की सच्चाई और आध्यात्मिकता की पूर्णता को मान चुके थे इसके बाद बैअत का सिलसिला धीरे-धीरे जारी रहा यहां तक कि उन सहाबा की सूची से जो आपने 1896 ई० के अंत में तैयार की ज्ञात होता है कि उस समय में प्रसिद्ध बैअत करने वालों की संख्या 313 थी इस सूची में विशेष परिस्थितियों को छोड़ कर स्त्रियों और बच्चों के नाम सम्मिलित नहीं थे और न ही अप्रसिद्ध अहमदियों के नाम सम्मिलित हैं जिन्हें मिलाकर उस समय तक अर्थात 1896 ईसवी के अंत तक जमाते अहमदिया की कुल संख्या डेढ़-दो हज़ार समझी जा सकती है। (पृष्ठ 93 से 95)

☆ ☆ ☆

मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन[रज़ि] ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 28) अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

...उसके इकलौते बेटे को हैज़ा हो गया। कुछ तो वह मुश्रिकाना विचारधारा के कारण और कुछ इसलिए कि मुझको महमूद का इलाज करते भी देखा था, मेरे पास दौड़ता और रोता हुआ आया और कहा हमारे घर चलो और भोजन भी खाओ। मैं चला गया और उस के लड़के को ये दवाई दी:- गुल नाशगुफ़्ता उश्र (आख) तौला, सुहागा बरीयां 5 माशा, दार फ़िलफ़िल 5 माशा, लौंग 5 माशा, ज़ंजबील 5 माशा। मैंने गोली बनाईं और नीम की अंतर छाल के पानी के साथ दीं और लहसुन कूट कर उसके नाखूनों पर बांध दिया। लड़के की हालत संभल गई। उसकी मां ने ताजा चोखा बना कर मुझको उसके अंदर बैठा कर भोजन कराया। शहर में महामारी बहुत अधिक बढ़ गई और हम वहां वैद्य बन गए। नंबरदार ने हमारा पैसा वापस कर दिया और मुझे कहा कि आपको मैं आपके सामान सहित भोपाल पहुंचा दूंगा। उसने अपने वादे को भली-भांति निभाया। उसी मार्ग में मैंने हज़रत शाह वजीहुद्दीन के (जो हमारे शैखुल मशाइख शाह वली उल्ला साहब के बड़े थे) गंज शहीदान को देखने और सीख प्राप्त करने में बहुत फायदा उठाया। वहां शाह साहब को कंगन वली कहते थे।

मैं भोपाल पहुंचा तो मेरे पास कुछ रुपए थे जिसको मैंने अपने सामान के साथ बाहरी सराय में रखा और एक रुपया उसमें से निकाल लिया क्योंकि बिना किसी विशेष अनुमति के शहर के अंदर किसी अजनबी को जाने नहीं देते थे इसलिए मैंने बाहरी सराय में सामान रखकर कपड़े बदले और वह एक रुपया रुमाल में बांधकर शहर में चला गया। शहर में थोड़ी दूर चलकर एक बावर्ची की दुकान आई वहां जाकर मैंने भोजन किया। उस बावर्ची ने आठ आने मुझसे मांगे मैंने उसको रुपया दिया उसने अठन्नी वापस कर दी। वह अठन्नी लेकर मैं चला और किलेदार से अनुमति प्राप्त की। थोड़ी देर के बाद जो देखता हूं तो वह अठन्नी कहीं गिर गई थी जब वापस सराय में पहुंचा तो मेरा सामान तो सुरक्षित था परंतु रुपए उसमें से गायब थे। दूसरे दिन मैंने सामान को लेकर जब शहर के द्वार में प्रवेश किया तो यह चिंता थी कि पुस्तकें आदि कहां रखूं। जब मैं उसी बावर्ची की दुकान के सामने से गुजरा तो उसने कहा कि भोजन कर लो। मैंने पुस्तकें और सामान उसकी दुकान पर रखकर निसंकोच होकर खूब भोजन किया। मेरे दिल में यह था कि पैसे तो हैं नहीं परंतु क्या मेरा सारा सामान अठन्नी का भी नहीं होगा? मैं सामान वहीं रखकर चला आया। भोपाल में बाजी की मस्जिद बड़ी अच्छी हवादार स्थान पर और तालाब के किनारे थी। मुझको बहुत पसंद आई मैं अधिक समय उसी में रहता था। अब मैं उस बावर्ची की दुकान की ओर भी नहीं जा सकता था। अत: मुझको बहुत समय तक खाने का अवसर न मिला। एक दिन मैंने दिल में विश्वास किया कि आज संभवत: शाम तक मैं बचूंगा नहीं। उस बाजी की मस्जिद में एक चबूतरा था असर के बाद में टेक लगाकर उस चबूतरे में बैठ गया और फिर लेट गया।

मेरे शरीर से पसीना निकल रहा था और यह अनुमान था कि शाम तक शायद ही जीवित रहूं। उसी समय वहां मुंशी जमालुद्दीन जी नमाज़ के लिए आए और नमाज़ पढ़कर अपने इमाम साहब को मेरे पास भेजा। उस समय मैं तो जान से भी हाथ धोने को था। अत: इमाम साहब ने जो कुछ मुझसे कहा उसका उत्तर मैंने बहुत रूखा सूखा दिया, मालूम नहीं कि इमाम साहब ने वापस जाकर क्या कहा होगा। परन्तु उनके पहुंचते ही मुंशी साहब अपने साथियों के साथ स्वयं मेरे पास चले आए। कमजोरी के कारण मैं उठ नहीं सकता था और मेरा स्वभाव भी नहीं था। इमाम साहब ने ही आगे बढ़कर मुझसे कहा मुंशी साहब आ रहे हैं। मैंने कहा आने दो। मुंशी साहब आए और मैं लेटा ही रहा मुंशी साहब ने कहा आप पढ़े लिखे हैं? मैंने कहा हां फिर उन्होंने कहा आप क्या क्या ज्ञान जानते हैं? मैंने कहा सभी कुछ जानता हूं। तब उन्होंने अपनी नब्ज़ मुझको दिखाई। मुझे यह तो याद नहीं मैंने नब्ज़ किस एहतियात से देखी। उस दिन उनको बहुत बदहजमी (अपच) हो चुकी थी। उनको मैंने नब्ज़ देख कर कहा कि बदहजमी है। उन्होंने मुझसे नुस्खा मांगा मैंने उनको नुस्खा लिखवा दिया जो बहुत कीमती था। उन्होंने कहा अगर इससे लाभ न हो मैंने उसका उत्तर बहुत ही सख्ती से दिया। फिर उन्होंने कहा आप मसाहत (क्षेत्रफल) का ज्ञान जानते हैं मैंने कहा जानता हूं। सामने तालाब था जो बहुत बड़ा था उन्होंने कहा कि आप यहां बैठकर उस तालाब की मसाहत कर सकते हैं? मैंने कहा हां, मैंने एक नियम की ओर संकेत किया कि यह तो एक कलम के माध्यम से कर सकते हैं। बस उसके बाद वे सब लोग चले गए। रास्ते से उन्होंने कहला भेजा कि हम आपकी मेहमान नवाज़ी करना चाहते हैं। मैं न उठ सकता था न जा सकता था, मैंने कहा मुझको मेहमान नवाज़ी की कोई ज़रूरत नहीं। तब उन्होंने कहला भेजा कि दावत स्वीकार करना सुन्नत है। मैंने सोचा मरते तो हैं आखिर समय में सुन्नत का तो पालन हो और कहा कि बहुत अच्छा दावत स्वीकार है।

संभवत: दिन अभी बहुत शेष था कि एक सिपाही आया और कहा कि खाना तैयार है चलो। मैंने उससे कहा कि मैं चल नहीं सकता उस भले आदमी ने कहा कि आप मेरी पीठ पर सवार हो जाओ। अत: मैं उसकी पीठ पर सवार हो गया और वह मुझ को खूब सावधानी से ले गया। वहां भोजन दस्तरखान पर लगाया जा चुका था। उस सिपाही ने ले जाकर मुझको मुंशी साहब के पास ही बिठा दिया। मैंने उस समय बहुत ध्यान पूर्वक देखा कि क्या चीज है जो खाऊं। पुलाव मुझे बहुत पसंद था। मैंने पुलाव की प्लेट में से एक कौर उठाया जब मुंह के निकट ले गया तो डरा कि कहीं ऐसा न हो कि गले में फंस जाए और जान निकल जाए। इसलिए पुलाव के कौर को फेंक दिया फिर जो ध्यान से देखा एक बर्तन में मुर्गे का शोरबा (तरी) था। मैंने उसको उठा लिया और एक बहुत छोटा सा घूंट भरा तो मेरी आंखों में चमक सी आ गई। फिर एक और घूंट भरा। इसी प्रकार धीरे-धीरे मैंने उसको पीना आरंभ किया। मुंशी साहब ने अपने बावर्ची को बुलाया और पूछा क्या इस पुलाव में कोई कमी है। उसने उत्तर दिया कि इसमें कमी तो कोई नहीं हां इसके मुर्गे में कुछ दाग लग गया था क्योंकि यह बर्तन बड़ा है और चावल अधिक हैं। मैंने दाग लगा हुआ गोश्त नीचे दबा दिया है। मुंशी साहब ने उसमें से एक कौर उठा कर सूंघा परंतु

उनको कुछ महसूस न हुआ। वह यह समझे कि इसने सूंघ कर इस कमी को भाप लिया है और कौर छोड़ दिया। फिर उन्होंने बावर्ची से कहा कि इन तमाम खानों में से सबसे अच्छा पका हुआ खाना कौन सा है? उसने कहा शोरबा (तरी) जिस का प्याला उनके हाथ में है। खैर मैंने वह शोरबा लगभग सारा ही पी लिया और वह उस समय मेरे लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ। मेरे होशो हवास और शारीरिक अंग ठीक हो गए। जब खाना खा चुके तो और लोगों को हटा दिया और मुझसे पूछा कि तुम कौन हो कहां से आए हो? उन दिनों मेरा लहजा उर्दू का लखनवी अंदाज था मैंने कहा कि मैं एक पंजाबी आदमी हूं और यहां पढ़ने के लिए आया हूं। यह बात मेरे लिए बहुत ही लाभकारी निकली। मुंशी साहब को यह अनुमान था कि यह कोई परेशान हाल, सदमे से पीड़ित और हालात का मारा आदमी है, पढ़ने का ऐसे ही नाम लिया है अन्यथा यह स्वयं एक विद्वान है। तब उन्होंने कहा कि आप मेरे पास रहें और मेरे साथ ही भोजन किया करें जहां आपको पढ़ना होगा मैं प्रयत्न करा दूंगा। उनका एक स्टोर रूम था उसमें रहने के लिए जगह दी और अपने पुस्तकालय के निरीक्षक को आदेश दिया कि किसी पुस्तक से इनको मत रोकना। मैंने कहा मेरे पास भी पुस्तकें हैं एक दुकान पर मैंने अपना सामान रख दिया है उस दुकानदार को कुछ पैसे देने होंगे वहां से सामान मंगवा दें जो देना होगा मैं दे दूंगा। थोड़ी देर के बाद सब सामान पुस्तकों सहित मेरे पास पहुंच गया और मैं उनके घर में रहने लगा।

हज़रत मौलवी अब्दुल कयूम साहब से मैंने बुखारी और हिदाय दो पुस्तकें पढ़नी आरंभ कर दीं। हज़रत मुंशी साहब के मगरिब के बाद स्वयं पवित्र कुरान का शाब्दिक अनुवाद पढ़ाया करते थे। एक दिन मैं भी इसमें चला गया वहां यह सबक था-

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَ اِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ

मोहम्मद इमरान का नवासा (नाती) कारी था। मैंने कहा क्या अनुमति है हम लोग कुछ प्रश्न भी कर सकते हैं? मुंशी साहब ने फ़रमाया अवश्य करें। मैंने कहा यहां भी मुनाफिकों का वर्णन है और नरम शब्द बोला है अर्थात بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ (उनमें से कुछ, कुछ की ओर) और इस सूरत के आरंभ में जहां उन्हीं का वर्णन है वहां बड़ा कठोर शब्द है- اِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ (अर्थात जब वे अपने शैतानों की ओर अलग हो जाते हैं) इस नरमी और कठोरता का क्या कारण होगा? मुंशी साहब ने फ़रमाया- क्या तुम जानते हो? मैंने कहा- मेरे विचार में एक बात आती है कि मदीना मुनव्वरा में दो प्रकार के मुनाफिक थे एक अहले किताब और दूसरे मुशरिक। अहले किताब के लिए नरम अर्थात बाज़ुहुम शब्द है और मुश्रिकीन के लिए सख्त "इला शयातीनिहिम" बोला है। मुंशी साहब सुनकर अपनी मसनद पर सीधे खड़े हो गए और मेरे पास चले आए। मुझसे कहा कि आप वहां बैठें और मैं भी अब कुरान शरीफ पढूंगा। ख़ुदा की कुदरत हम वहां एक ही शब्द से क़ुरआन करीम के शिक्षक बन गए।

(मिरक़ातुल यक़ीन फी हयाते नूरुद्दीन, पृष्ठ 97-101)

☆ ☆ ☆

फर्मूदात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि०

अनुवादक - सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : क्या महिला जमाअत करा सकती है?

उत्तर : हां।

प्रश्न : क्या महिलाएं अलग हो कर इकट्ठी जुमा पढ़ सकती हैं?

उत्तर : यदि कोई विशेष मजबूरी हो उसके आधार पर महिलाओं को अलग हो कर जुमा पढ़ने की आज्ञा दी जा सकती है ताकि उनमें धार्मिक अध्यात्मिकता कायम रहे परंतु यदि आम हालात में भी ऐसा करने की आज्ञा दे दी जाए तो पुरुषों और महिलाओं में मतभेद पैदा होने की संभावना है पुरुषों के विचार और तरफ जा रहे होंगे और महिलाओं के और तरफ इसीलिए साधारण अवस्था में यही आदेश है कि पुरुष और महिलाएं एक स्थान पर एकत्र हो कर जुमा पढ़ा करें।

ग़ैर मुबाईन के पीछे नमाज़

एक प्रश्न करने वाले को उत्तर लिखाया जिसने ग़ैर मुबाईन को इमाम बनाने के संबंध में कुछ स्थानीय मजबूरियों का वर्णन किया था।

यदि इस शर्त पर नमाज़ इकट्ठी हो सके कि ईमाम मुबाईन में से हो और खुत्बे में ख़िलाफत का कोई वर्णन न हो तो कर ले मैं यह पसंद नहीं करता कि वह मुस्तकिल ईमाम उनका हो उनके पीछे नमाज़ की आज्ञा के यह अर्थ है कि यदि कभी संयोग हो जाए तो पढ़ लें अर्थात हराम नहीं।

ग़ैर मुबाए के पीछे नमाज़

प्रश्न : जिन्होंने बैअत नहीं की (ग़ैर मुबाए) क्या उनके पीछे हमारी नमाज़ वैध है?

उत्तर : हां कोई बात नहीं उनके पीछे नमाज़ पढ़ लिया करो।

जो अहमदी ग़ैर अहमदी के पीछे नमाज़ पढ़ता है उसके पीछे नमाज़ वैध नहीं।

प्रश्न : क्या गे़र मुबा ग़ैर अहमदी ईमाम के पीछे नमाज़ हो सकती है या नहीं?

उत्तर : जो गे़र मुबा ग़ैर अहमदी के पीछे नमाज़ पढ़ने के कायल नहीं उनके पीछे आवश्यकता के समय नमाज़ वैध है।

दूसरी बात वह (गे़र मुबाईन) यह प्रस्तुत करते हैं कि एक दूसरे के पीछे नमाज़ पढ़ ली जाया करे। परंतु इस शर्त के मान लेने के यह अर्थ है कि हम अपने हाथ स्वयं काट दें। हमारा मतभेद किसी पैतृक संपत्ति के विषय में नहीं कि अमुक ने अधिक माल ले लिया और अमुक ने कम बल्कि हमारा मतभेद धर्म के संबंध में है ख़ुदा तआला फ़रमाता है

وَعَدَ اللّٰہُ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسۡتَخۡلِفَنَّہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ کَمَا اسۡتَخۡلَفَ الَّذِیۡنَ
مِنۡ قَبۡلِہِمۡ ۪ وَ لَیُمَکِّنَنَّ لَہُمۡ دِیۡنَہُمُ الَّذِی ارۡتَضٰی لَہُمۡ وَ لَیُبَدِّلَنَّہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِہِمۡ اَمۡنًا ؕ یَعۡبُدُوۡنَنِیۡ لَا

يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۶﴾
हम तो पवित्र क़ुरआन के इस आदेश के अधीन मतभेद करते हैं कि जो ऐसे ख़लीफा को नहीं मानता वह झूठा है अब एक तरफ तो हम कहें के जो ख़लीफा को नहीं मानता वह झूठा है और दूसरी तरफ घोषणा करें और आदेश दें कि उन लोगों के पीछे नमाज़ पढ़ लिया करो। यह नहीं हो सकता है ग़ैर मुबाईन की इस बात को स्वीकार कर लेने का तो यह अर्थ हुआ कि हमारी ख़िलाफत इस आयत के अधीन नहीं क्योंकि यदि इसके अधीन हो तो फिर उसके इन्कार करने वालों के पीछे पढ़ने का आदेश देने के क्या अर्थ। ...... हमने मजबूरी के समय में उदाहरणत: उनकी मस्जिद में कोई व्यक्ति बैठा हो और नमाज़ खड़ी हो जाए तो उनके पीछे नमाज़ पढ़ने की आज्ञा दी है परंतु इसकी वजह यह है कि हम उनके पीछे नमाज़ पढ़ने को हराम नहीं कहते लेकिन उनके पीछे नमाज़ पढ़ने का आदेश देना बिल्कुल अलग बात है। मजबूरी से किसी काम का करना और अर्थ रखता है और बिना मजबूरी के उसका करना और अर्थ रखता है।

ग़ैर अहमदी को लड़की देने वाले के पीछे नमाज़

कुछ लोग ऐसे हैं कि जब वे देखते हैं कि किसी व्यक्ति से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेश के विरुद्ध हुआ है उदाहरणत: किसी ने अपनी लड़की यदि ग़ैर अहमदी को दे दी तो वे तुरंत उसका बाइकाट कर देते हैं परंतु उनका यह अधिकार नहीं कि वे स्वयं उसका बाइकाट करें। उनको चाहिए कि हम तक बात पहुंचाएं फिर हम देखेंगे कि वह मुजरिम है या नहीं और यदि है तो उसने किन कारणों के अधीन ऐसा किया है या अज्ञानता से उससे यह कार्य हो गया है या कोई और कारण है। अत: आप लोगों का कर्तव्य है कि जब कोई ऐसी बात देखें तो अतिरिक्त इसके के स्वयं निर्णय कर लें कि उसके पीछे नमाज़ न पढ़ें या उसको अहमदी ही न समझे हमें सूचित करें और जब तक यहां से कोई निर्णय न हो उस समय तक स्वयं ही कोई निर्णय न करें। इससे उपद्रव बढ़ता है ऐसा व्यक्ति जिसने अतिरिक्त ज्ञान के की हज़रत अक़दस ने अहमदी लकड़ी का रिश्ता ग़ैर अहमदी से करना मना फ़रमाया है अपनी लड़की ग़ैर अहमदी को दे दी यदि वह तौबा नहीं करता तो उसके पीछे नमाज़ पढ़नी मना है।

प्रश्न : एक अहमदी जो संयमी और अच्छे आचरण वाला है चंदा भी देता है परंतु उसने ग़ैर अहमदी को रिश्ता लड़की का दे दिया है उसके विषय में क्या आदेश है?

उत्तर : जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्पष्ट आदेश टाल दिया वह अहमदी कहां है जब तक वह तौबा न करें और अपनी तौबा प्रमाणित न कर दिखाए वह अहमदी नहीं। हज़रत अक़दस ने तो यहां तक फ़रमाया है कि ग़ैर अहमदी के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले के पीछे नमाज़ न पढ़ो। फिर जो ग़ैर अहमदी को लड़की दे वह अहमदी किस बात का है। (पृष्ठ : 66-68) शेष.....

☆ ☆ ☆

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (4)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब **(भाग – 20)** अनुवादक – इब्नुल मेहदी लईक M.A.

हमारे प्रबंधकीय मामलों में हुज़ूर की शुभ दृष्टि कहां तक जाती है इसकी असंख्य घटनाओं के अवलोकन का अवसर केवल ख़ुदा तआला की कृपा से प्राप्त होता है। कुछ घटनाएं प्रस्तुत हैं :-

विनीत का प्रयास होता है कि अपने मित्रों के कार्य का वर्णन हुज़ूर की सेवा में दुआ के निवेदन के साथ करता रहूं। और तो हम उनके लिए कुछ कर नहीं सकते इतना तो करें कि उनके प्रयासों का वर्णन हुज़ूर की सेवा में करते रहें ताकि उनके लिए दुआ का अवसर उत्पन्न हो। जलसा सालाना यू-के के तीनों दिन एम-टी-ए का प्रसारण निरंतर जारी रहता है। जलसे के इज्लासों के दौरान वार्तालाप के प्रोग्राम प्रस्तुत किए जाते हैं उनके मेज़बानों के नाम जलसा सालाना से बहुत पहले हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत किए गए जो हुज़ूर ने कृपा दृष्टि से मंजूर किए। जलसे का प्रसारण अल्लाह की कृपा से बहुत सफल रहा। इतवार का जलसा समाप्त हुआ तो अगली सुबह जल्दी जल्दी हुज़ूर की सेवा में पत्र लिखा और बताया कि अलहमदुलिल्ला जलसे का प्रसारण सुन्दरतापूर्वक हुआ। प्रोग्राम बहुत सफल रहे और दर्शकों ने पसंद भी किए। इसी प्रकार यह कि मेज़बान हज़रात की सूची भी दर्ज है। हुज़ूर से उन सब के लिए दुआ का निवेदन है। हुज़ूर का प्रसन्नता पूर्वक उत्तर आया "अलहमदुलिल्लाह......... दुआ......... यदि अमुक का नाम भी लिख देते तो कोई हर्ज नहीं था।"

पत्र को देख कर हाथों के तोते उड़ गए, मैं उन साहिब का नाम किस प्रकार भूल गया वह तो हमारे बड़े अच्छे प्रिज़ेंटर हैं। काम बहुत मेहनत से किया है क्योंकि दुआओं की सूची बिना मूल सूची को देखे तैयार की थी और जल्दी में पत्र भी दिया था। अत: उस प्रिय मित्र का नाम लिखने से रह गया। दुख, खेद और शर्मिंदगी और ऐसी विभिन्न भावनाएं दिल में उत्पन्न हुई परंतु सबसे बढ़कर आश्चर्य कि मैं यह नाम किस प्रकार भूल गया। परंतु इससे भी अधिक आश्चर्य की एक नाम जो रह गया वह हुज़ूर को याद था। बिना किसी सूची को देखे हुज़ूर की सेवा में दोबारा पत्र लिखा, क्षमा याचना की और उन साहिब की दिन-रात की मेहनत का वर्णन करके उनके लिए अलग दुआ का निवेदन किया।

यद्यपि यह नाम भूल से रह गया था परंतु यह पूरी घटना एक भरपूर सबक़ था। एक तो यह कि कभी ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की सेवा में कुछ भी लिखते हुए हमेशा समस्त जानकारी समक्ष होनी चाहिए। स्मरण शक्ति पर भरोसा पर्याप्त नहीं, दूसरा यह कि हुज़ूर को पत्र भेजते समय कुछ जल्दी से काम लेना नहीं चाहिए जो कुछ मैं लिख रहा था वह अत्यंत नेक नियति से एक दुआ का निवेदन था कोई आपातकालीन अनुमति या मार्गदर्शन नहीं मांग रहा था। क्या हर्ज कि अनुमति वाले पत्र से सब नाम दर्ज करता और फिर पत्र प्रस्तुत करता क्योंकि जहां पत्र भेजा जा रहा है वहां या तो सब उपस्थित रहता है या फिर ख़ुदा बिल्कुल उसी स्थान पर लाकर ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की दृष्टि को ठहरा देता है जहां कुछ कमी होती है।

यह अनुभव तो गुलशने वक़्फ़-ए-नौ की क्लासों में एक बार नहीं कई बार हुआ। हुज़ूर के समक्ष महमूद हॉल में एक नहीं दो नहीं एक सौ या उससे भी अधिक वाक़फीने नौ बैठे हैं दूर कोने में बैठे एक बच्चे को संबोधित करके फ़रमाया :- तुम्हारा नाम ज़ाफ़िर है तो "ज़ोए" से नहीं लिखते? प्रबंधकों ने "ज़्वाद" से लिख दिया है। हम हैरान कि इतने सब में से केवल एक बच्चे के कार्ड पर उसके नाम में इमला की ग़लती हुई है परंतु हुज़ूर ने उसी को संबोधित किया, उसी के कार्ड पर इतनी दूर से दृष्टि भी पड़ गई और इस बारीकी से पड़ गई कि उसके नाम की इमला तक नज़र आ गई।

क्लासों के दौरान बच्चों ने जो कुछ पढ़ना होता है वह मवाद हुज़ूर के सामने भी रखा होता है ताकि हुज़ूर कुछ देखना चाहे और ठीक करना चाहे तो आसानी हो। यह मवाद विनीत भी अपने पास रखता था और जैसे-जैसे बच्चा उसे पढ़ता जाता विनीत अपने पास पृष्ठ पलटता जाता था कि कहीं हुज़ूर कुछ पूछें तो उसी वक्त जल्दबाज़ी न हो अपितु संबंधित भाग सामने हो। यह मवाद सामान्य रुप से जैसे का तैसा पढ़ा जाता है परंतु यह कैसी विचित्र बात है पढ़ने वाले ने अभी पढ़ना आरंभ किया है मेरी नज़र पड़ गई कि आगे जाकर एक जगह पर टाइप करने में ग़लती हो गई या कोई और ग़लती है अभी पढ़ने वाला बच्चा वहां नहीं पहुंचा था कि हुज़ूरे अनवर ने उसी क्षण वह कागज़ात उठाए एक, दो पन्ने, तीन, चार पलटे और बिल्कुल उसी स्थान पर पहुंच कर नज़र उठाई मुस्कुराए, मेरी ओर देखा और कागज़ात वापिस रख दिए उसी समय या बाद में उसका सुधार भी कर दिया।

सब जानते हैं कि हुज़ूर अनवर के दिन-रात कितने अधिक व्यस्त हैं और समय निर्धारित हैं। हुज़ूर ने स्वयं भी कई अवसरों पर फ़रमाया कि टी-वी देखने का समय कम मिलता है, अधिक से अधिक ख़बरें सुन लेता हूं परंतु फिर भी अतिशियोक्ति रहित दर्जनों बार ऐसा हुआ है कि कभी मुलाकात में कभी प्राइवेट सेक्रेटरी साहब के माध्यम से संदेश भिजवा कर और कभी प्राइवेट सेक्रेटरी साहब के दफ्तर से फोन मिलवा कर स्वयं फोन पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अभी मैंने एम-टी-ए लगाया या यह कहा कि रात एम-टी-ए संयोगवश लगाया तो अमुक प्रोग्राम चल रहा था और एक बात वर्णन हो रही थी अमुक साहब ने यह बात की, यह यों नहीं यों होनी चाहिए थी। उसे

शेष पृष्ठ 32 पर

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal flipkart amazon.com Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

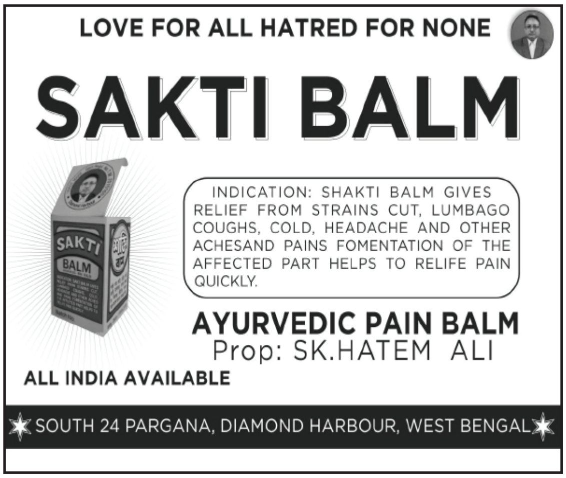
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
SAKTI BALM
INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.
AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI
ALL INDIA AVAILABLE
SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

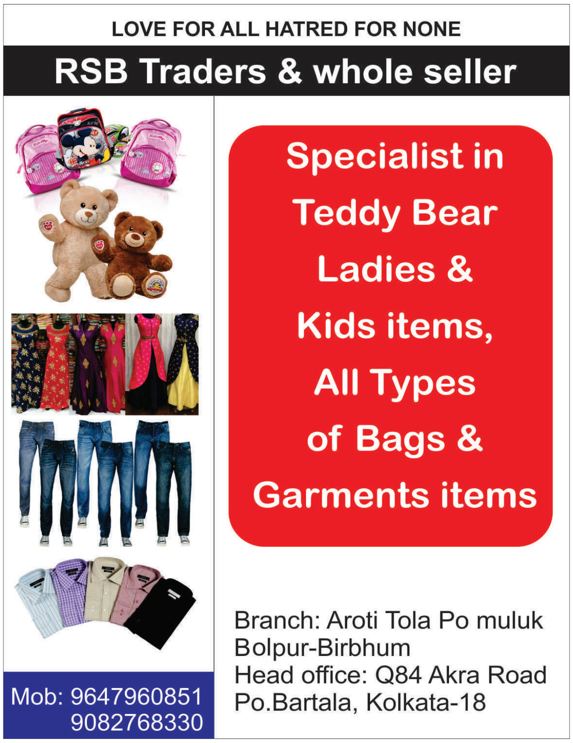
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
RSB Traders & whole seller
Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items
Mob: 9647960851
9082768330
Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE
M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)
Cell :9440996396,9866531100

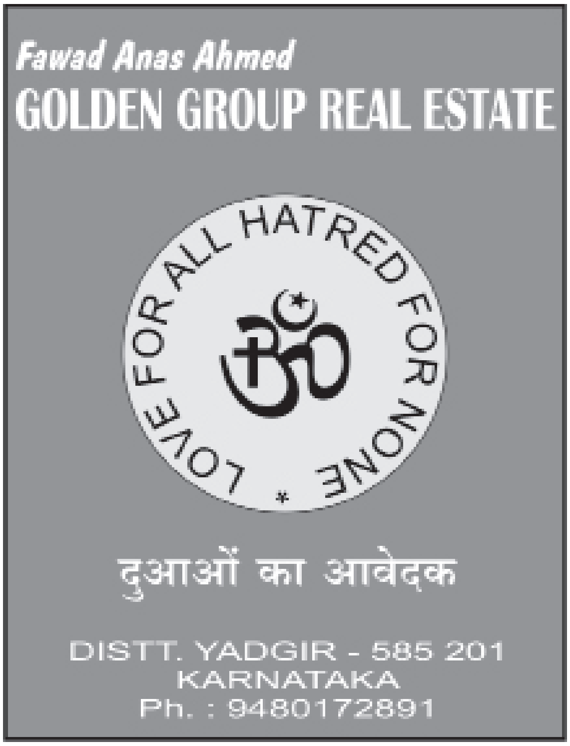
Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE
LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE
दुआओं का आवेदक
DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

SWARAJ
SINCE 1974
सलाम मोटर्स
अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रेक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर
मो. यूसुफ काठात
9460458032
अताउल्लाह खान
8696714040
शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Is Allah not sufficient for His servant

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu
Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

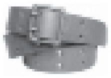

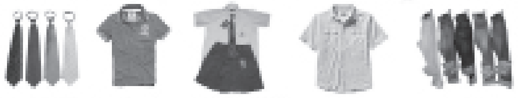

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपना feed back अवश्य दें

प्रिय पाठको! पत्रिका "**राहे ईमान**" को पढ़कर आपको कैसा लगा यह हमें अवश्य बताएं। हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? इसमें छपने वाले लेखों से आपको क्या लाभ प्राप्त होता है हमें यह भी अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञान वर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो हमें अवश्य बताएं। खुद्दामुल अहमदिया भारत आपके सुझाव का स्वागत करता है और हम इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का हर संभव प्रयास करेंगे। इसके अतिरिक्त यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो अवश्य भिजवाएं।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मजलिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवाएं:-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

पृष्ठ 29 का शेष

ठीक करवाओ। और हुज़ूर की रूटीन तो सबके सामने है जो यहां लंदन में नहीं रहते या जिन्हें किसी भी वजह से यह मालूम नहीं आबिद वहीद खान साहब की डायरी और प्राइवेट सेक्रेट्री साहिब का एम-टी-ए पर प्रकाशित होने वाला इंटरव्यू इस बात का पता देते हैं कि हुज़ूर की दिनचर्या कितनी व्यस्त है। मेरा विश्वास है कि यह भाग जिनका सुधार हुज़ूर ने कई अवसरों पर करवाया वह इसी समय प्रकाशित होना मुक़द्दर थे जब हुज़ूर अनवर की मुबारक निगाह टी-वी पर पड़ी। गालिब ने तो काव्य शैली में कह दिया कि

आते हैं गैब से यह मज़ामीन ख्याल में

वास्तव में तो परोक्ष से आने वाले विषयों को देखना हमें यहां नज़र आता है जहां अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर के माध्यम से हमारे सुधार के सामान उत्पन्न करता है। (पृष्ठ 6-8)